मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

हमारा वास्तविक दुश्मन

''जंगों का इतिहास साफ़ तौर पर बताता है कि हवस की आग, नफ़्स की आग और पेट की आग बुझाने के अतिरिक्त हुकूमतों के सामने कोई विशेष मक़सद नहीं रहा। किसी दूसरे गृह से कोई दुश्मन नहीं उतरा, बाहर से कोई सताने के लिए नहीं आया, किसी दूसरे आया बल्कि जो कुछ हमारी मुसीबतें हैं वह हमारे ही हाथों द्वारा लायी हुई एवं हमारे ही व्यवहारिक पतन का परिणाम हैं।''

हज़रत मौलाना
सैय्यद अबुल हसन अली
हसनी नदवी
(रह0)

FEB 17

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

₹10/-

फ़ित्नों का उदय

अल्लाह के रसूल (स०अ०) विभिन्न प्रकार के फ़ित्नों के जो आम हालात हदीसों में बताए हैं, उनमें बहुत से ऐसे हैं कि उनको पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे आप (स०अ०) आज के माहौल को वाक़ई आंखों से देखकर उसकी तस्वीर खींच रहे हों। उनको ग़ौर से पढ़िए और यह देखिए कि यह हमारे आस-पास की तस्वीर है या नहीं? आप (स०अ०) ने फ़ित्नों के ज़माने के बारे में बताया कि:

- ज़माना जल्दी गुज़रेगा।
- नेक कामों में कमी हो जाएगी।
- क़त्ल व लूटपाट अधिक होगा।
- ख़ुद क़ातिल को मालूम नहीं होगा कि वह क़त्ल क्यों कर रहा है? न मरने वाले को यह पता होगा कि उसे क्यों क़त्ल किया गया।
- शराब को शरबत कहकर हलाल कहा जाएगा, ब्याज को व्यापार कहकर हलाल कहा जाएगा, रिश्वत को तोहफ़ा कहकर हलाल कहा जाएगा।
- औलाद (की इच्छा के बजाए उस) से घृणा होगी और बारिश से ठंडक के बजाए गर्मी की सी तकलीफ़ होगी और बुरे लोग सैलाब की तरह फैल जाएंगे।
- झूठे को सच्चा कहा जाएगा और सच्चे को झूठा।
- बेईमान को ईमानदार और ईमानदार को बेईमान बताया जाएगा।
- दूसरों से रिश्ता जोड़ा जाएगा।
- हर क़बीला और गिरोह की सरबराही मुनाफ़िक़ों के हाथ में होगी।
- जो आदमी सही माने में मोमिन होगा वह समाज में छोटी-छोटी बकरियों से ज़्यादा गिरा हुआ समझा जाएगा।
- मस्जिद की मेहराबों पर ज़रकारी होगी लेकिन दिल वीरान होंगे।
- मर्द मर्द से इच्छा पूरी करेंगे और औरतें औरतों से।
- मस्जिदों के अहाते बड़े-बड़े और मेम्बर छोटे-छोटे होंगे।
- गाने बजाने का दौर होगा और शराब पी जाएगी।
- कमी निकालने वालों, चुग़ली करने वालों, ताना देने वालों की संख्या अधिक होगी।
- लोग नमाज़ छोड़ेंगे और अमानते बर्बाद होंगी।
- ब्याज आम होगा और झूठ को हलाल क़रार दिया जाएगा।
- लोग इंसान की जान की कोई क़ीमत न समझेंगे और ऊंची-ऊंची इमारतें बनाएंगे।
- इंसाफ़ कमज़ोर हो जाएगा और ज़ुल्म बढ़ जाएगा।
- ताक़त की अधिकता होगी, दुर्घटना में होने वाली मृत्यु की संख्या बढ़ जाएगी।
- लोग एक-दूसरे पर झूठे आरोप बहुत लगाएंगे।
- जो लोग नंगे पांव, नंगे बदन फिरते थे, वे शासक बन जाएंगे।

यह कुछ उदाहरण हैं उन पेशगी ख़बरों के जो रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़ित्नों के दौर के बारे में चौदह सौ साल पहले बताए थे और यह बातें सदियों से हदीसों की किताबों में लिखी चली आ रही हैं। मैंने यह बातें हदीस की केवल कुछ किताबों से इस समय सरसरी तौर पर एकत्र की हैं, वरना इस प्रकार की हदीसों का बड़ा भण्डार मौजूद है।

मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:०२ फ़रवरी २०१७ ई० वर्ष:९

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

स्वार्थ का तूफ़ान.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

शिष्टता की शिक्षा.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

पश्चिमी मीडिया और मुसलमान.....५
मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

सहनशीलता एवं सहिष्णुता.....७
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

वास्तविक प्रेम.....८
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

नफ़िल नमाज़ की फ़ज़ीलत व उनके एहकाम.....१०
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दावत का अंदाज़.....१३
डॉक्टर ख़ालिद मुश्ताक़

सीरिया में क़त्लेआम.....१४
मसऊद अबदाली

फ़रिश्तों पर ईमान.....१६
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूनी नदवी

मुस्लिम वोटों की राजनीति.....१८
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

दिलों की फ़तेह.....१९
अबुल अब्बास ख़ाँ

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

स्वार्थ का तूफ़ान

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इस समय पूरी दुनिया तूफ़ान की चपेट में है। यह ऐसा तूफ़ान है जिससे न कोई देश बचा है, न कोई शहर और क़स्बा। मुहल्ला–मुहल्ला, घर–घर इस तूफ़ान की चपेट में है। शायद कुछ ही ऐसे लोग हों जो इसकी तेज़ हवाओं का सामना करते नज़र आएं। यह तूफ़ान हवा और पानी का नहीं, आग का भी नहीं, उससे भी अधिक भयावह और गंभीर है। आग, हवा और पानी के तूफ़ान से घर बर्बाद होते हैं। कारख़ाने तबाह होते हैं। लोग मरते हैं लेकिन यह ऐसा तूफ़ान है जिसने पूरी मानवता को तबाही के रास्ते पर डाल दिया है। वह मनुष्य जिसकी विशेषता यही थी कि वह दूसरों के लिए जीना जानता था। दूसरों की मदद करने में उसको संतोष होता था। ज़रूरतमन्द की मदद करके उसको सुकून मिलता था। आज वही मानवता इस तूफ़ान के भंवर में फंस गई है और दूर–दूर तक कोई खेवनहार (मल्लाह) नज़र नहीं आता जो उसकी डूबती हुई नैय्या को पार लगाए और उससे ज़्यादा अफ़सोस की बात यह है कि नाव में सवार लोग मीठी नींद सो रहे हैं उनको ज़रा भी चिन्ता नहीं कि उनकी नाव डूबने वाली है।

निसंदेह यह तूफ़ान स्वार्थ का है जो हर घर में प्रवेश कर चुका है। हर देश अपने से कमज़ोर देश को हड़पने के लिए तैयार है, जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को खाने के लिए तैयार रहती है। हर ताक़तवर कमज़ोर पर हमलावर है। इन्सान अपनी इन्सानियत को भूल चुका है। उसको परिन्दों की तरह हवा में उड़ना आ गया। मछलियों की तरह पानी में तैरना आ गया लेकिन इन्सानों की तरह ज़मीन पर चलना नहीं आया। वह जानवरों जैसा जीवन जी रहा है और ऊपर से यह कि उसको इस पर गर्व है। उसको अपनी दरिन्दगी पर गर्व है। ज़ुल्म व अत्याचार को वह हुनर समझता है। किसी का हक़ छीन लेना उसके लिए कला है। आज यूरोप व अमरीका के कल्चर ने दुनिया को तबाह कर दिया।

एक साबह ने क़िस्सा सुनाया कि जब मैं इंग्लैण्ड के एयरपोर्ट पर उतरा तो वहां मुझे भेड़िये की तस्वीर नज़र आई। मुझे आश्चर्य हुआ। जो साहब मुझे रिसीव करने आये थे, उन्होंने कहाः जानते हो क्या है?यह यहां की सभ्यता का प्रतीक है। अपने फ़ायदे के लिए तुम जिसको चाहो चीर–फाड़ कर तबाह कर दो। हर हाल में आगे बढ़ना है जिस पर बस चले धक्का देकर आगे बढ़ जाओ। पीछे मुड़कर न देखो कि वह तड़प रहा है या उसकी जान निकल रही है। बस तुम अपने फ़ायदे के लिए सबकुछ करते चले जाओ।

यह दुनिया का माहौल है। पूरी दुनिया इसका शिकार है। आज एक बाप भी बेटे पर ख़र्च करता है तो सोचता है कि कल उससे हमें कुछ मिलने वाला है। यूरोप ने इन रिश्तों की पवित्रता को भी रौंद डाला। प्रकृति को बिगाड़ कर रख दिया।

स्वार्थ के इस तूफ़ान में मुहब्बतों के दिये जलाना कोई आसान काम नहीं। मगर यह सच्चे इन्सानों का पेशा हैः

हवा है गो तुन्द व तेज़ लेकिन चिराग़ अपना जला रहा है।
वो मर्द–ए–दरवेश जिसको हक़ ने दिये हैं अन्दाज़–ए–ख़ुसरुआना।।

यह ज़िम्मेदारी सबसे बढ़कर मुसलमानों की थी लेकिन अफ़सोस कि मुसलमान भी इस तूफ़ान की चपेट में आ गए। तूफ़ान के इन घटाटोप अंधेरों में मुहब्बत और इन्सानियत व हमदर्दी के चिराग़ जगह–जगह जलाने की ज़रूरत है। इसके लिए बड़ी क़ुर्बानी चाहिए। बहुत धैर्य की आवश्यकता है। अत्यधिक दृढ़ संकल्प इसके लिए आवश्यक है। हर प्रकार के भौतिक लाभ से परे होकर सच्चाई, ईमानदारी और मानवता व हमदर्दी का साथ देना है। इसकी आवाज़ लगानी है। दुनिया के शोर में यह आवाज़ भले बहुत धीमी लगे लेकिन एक दिन यह एक ऐसा नारा होगा जो न जाने कितने दिलों को दीवाना बना देगा और एक नई सुबह बनकर ऐसी चमक पैदा करेगा जिससे अंधेरे मिट जाएंगे।

पहले भी दुनिया ने यह सब अपनी आंखों से देखा है और फिर दुनिया उसी के इन्तिज़ार में है जो उसको तबाही के मुंह से निकाले और उसकी डूबती नैय्या को पार लगाए।

शिष्टता की शिक्षा

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

"बेशक जो लोग आपको पुकारते हैं, आपके घरों के पीछे से, उनमें अधिकतर बात को नहीं समझते, अगर यह लोग सब्र करते जब तक कि आप खुद न निकलते तो उनके लिए बेहतर होता, अल्लाह तआला माफ़ करता है और रहम करने वाला है।" (सूरह हुजुरातः 4–5)

उपरोक्त आयतों में अल्लाह के रसूल (स0अ0) के बारे में शिष्टता (अदब) की शिक्षा देने की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि अधिकांश बद्दू (देहाती) अपने स्वभाव के अनुसार आकर रसूलुल्लाह (स0अ0) के घर के बाहरी हिस्से से तेज़ आवाज़ से रसूलुल्लाह (स0अ0) को पुकारते थे, " ऐ मुहम्मद! बाहर निकलो" यह वे लोग थे जो गांव व देहात से आते थे और अक्खड़ होते थे, सभ्यता नाम की कोई चीज़ नहीं जानते थे, बड़े से किस प्रकार बात करनी चाहिए, बराबर वालों और छोटों से बात करने का क्या तरीक़ा होना चाहिए, उन लोगों को इस बारे में कुछ भी जानकारी न थी। एक बार ऐसा ही हुआ कि देहात के कुछ लोग आए, उन्होंने बाहर से मुहम्मद–मुहम्मद पुकारना शुरू कर दिया ताकि वे रसूलुल्लाह (स0अ0) को अपनी बात सुना सकें, यह अलग बात है कि उनका इस भांति आवाज़ देना किसी बुरी नियत से नहीं बल्कि अज्ञानतावश पर था। लेकिन अशिष्टता, अशिष्टता (बेअदबी) ही होती है चाहे वह बुरी नियत से न हो। उन लोगों का यह तरीक़ा अल्लाह तआला को अपने रसूल के लिए बिल्कुल पसंद न था। इसलिए उनकी पकड़ की। नबी के साथ किस प्रकार का बर्ताव करना चाहिए उसकी शिक्षा दी और उन देहातियों के बारे में कहा कि उनकी यह हरकत अज्ञानता के कारण है। उन्होंने यह कार्य अपने स्वभाव के अनुसार किया है। उन्हें यह समझ नहीं है कि वे रसूलुल्लाह (स0अ0) के साथ किस प्रकार का बर्ताव करें, किस प्रकार बात करें, उनकी तुलना में रसूलुल्लाह (स0अ0) का स्थान कितना श्रेष्ठ है।

दूसरी आयत में उन्हीं लोगों के बारे में कहा गया कि उनके लिए बेहतर बात तो यह थी कि आपके घर से निकलने का इन्तिज़ार करते, इस प्रकार आपको आवाज़ लगाना सही नहीं है। संभव है कि उस समय रसूलुल्लाह (स0अ0) ऐसी स्थिति में हों कि उनके लिए निकलना उचित न हो, लेकिन आप पुकारे चले जाएंगे तो इस बात से उनको व्यवधान होगा और कष्ट भी होगा। ऐसा भी हो सकता है कि घर के अन्दर रसूलुल्लाह (स0अ0) पर वह्य (ईशवाणी) नाज़िल (अवतरित) हो रही हो, जिस दौरान रसूलुल्लाह (स0अ0) को किसी का पुकारना उचित नहीं है, अतएव बाहर से हर व्यक्ति को आवाज़ देने में सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि रसूलुल्लाह (स0अ0) का मामला साधारण मनुष्य से बिल्कुल अलग है।

इन आयतों के द्वारा अल्लाह तआला ने देहात के लोगों को सम्बोधित करके शहर के लोगों को भी सचेत कर दिया कि तुम भी अल्लाह के रसूल (स0अ0) को साधारण न समझो। उनका अल्लाह से विशेष संबंध है और इसी संबंध के कारण उनको तुम पर ऐसी वरीयता प्राप्त है कि किसी को वह वरीयता प्राप्त नहीं है। यद्यपि वे मनुष्य हैं लेकिन अल्लाह ने उनको अपना लिया है। अल्लाह उनकी पूरी संरक्षता करता है। अल्लाह उनको हिदायत देता है। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

"आप जो बात भी कहते हैं अपने दिल से नहीं कहते, बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से इशारे और मार्गदर्शन के आधार पर कहते हैं।" (सूरह नज्मः 3–4)

मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह (स0अ0) के कहने को उनका कहना नहीं समझना चाहिए, बल्कि वास्तव में वह अल्लाह का कथन होता है, यद्यपि पहुंचता रसूलुल्लाह (स0अ0) के वास्ते से है। इसलिए कि अल्लाह तआला प्रत्यक्ष रूप से किसी को सम्बोधित नहीं करता, यदि अल्लाह तआला की बात प्रत्यक्ष आए तो उसको इन्सान बर्दाश्त ही नहीं कर सकता है। स्वयं रसूलुल्लाह (स0अ0) का मामला यह था कि जब वह्य (ईशवाणी) आती थी तो आप पर इतना बोझ पड़ता था कि आप पसीना–पसीना हो जाते थे और आपकी कमर झुक जाती थी। यदि आप सवारी पर होते तो लगता कि पीठ टूट जाएगी। आपका घुटना किसी के ऊपर होता तो लगता कि कुन्टलों बोझ उस पर लाद दिया गया है, लेकिन अल्लाह तआला ने आपको ऐसा बनाया था कि

आप इतना बोझ बर्दाश्त कर लेते थे। यदि वही वह्य (ईशवाणी) किसी दूसरे मनुष्य पर उतरती तो वह दबकर मर जाता, लेकिन उसको बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

अर्थात इन शिक्षाओं का सार यह हुआ कि रसूलुल्लाह (स0अ0) के स्थान को इस भांति समझा जाए कि हमारे सभी कामों में उसका प्रभाव प्रकट हो। रसूलुल्लाह (स0अ0) के नाम पर किसी भी सभा के आयोजन के समय यह एहसास हो कि हम किसकी बात सुन रहे हैं, किसकी सभा में बैठे हैं, ऐसा न हो कि ऐसी पवित्र सभाओं में सम्मिलित भी हों मगर उसके बाद भी हम अपने दोस्तों से बातचीत में लगे हों या ऐसे बैठें हों जैसे कि अपने किसी साथी के सामने, क्योंकि रसूलुल्लाह (स0अ0) की पवित्र ज़ात वह है जिसका अल्लाह तआला से विशेष संबंध है किन्तु साधारण मनुष्य की तरह नहीं। रसूलुल्लाह (स0अ0) कहते थे कि मैं एक इन्सान हूं, जिस तरह लोग करते हैं मैं भी करता हूं, बस यह है कि अल्लाह ने मुझे नबी बनाया है। यह जो सम्मान आपको मिला इससे आप दूसरे मनुष्यों से श्रेष्ठ हो गए लेकिन इन्सान रहे।

उपरोक्त आयतों में विशेषतयः अरबों को हिदायत दी गई है क्योंकि अरबों का स्वभाव अत्यधिक निसंकोची था। वे बादशाह से भी "तुम" से सम्बोधन करते थे। अरबों के यहां यह अजम (द्रविड़) से सभ्यता आयी, जोकि एक अच्छी सभ्यता है विभिन्न लोगों के पद के अनुसार उनसे मामला करना चाहिए। अरब बादशाह से ऐसे बात करते थे जैसे कि किसी साधारण मनुष्य से, जैसेः "ऐ बादशाह! तुम्हें ऐसा करना चाहिए" बहुत से सीधे–साधे अरबों ने रसूलुल्लाह (स0अ0) के साथ भी यही व्यवहार किया, लेकिन साधारणतयः यह हाल था कि बहुत से सहाबा (सहचर) कहते थे कि हमने रसूलुल्लाह (स0अ0) को निगाह भर कर देखा भी नहीं, अर्थात हिम्मत नहीं पड़ी कि आप पर खुली निगाह डाल दें, क्योंकि रसूलुल्लाह (स0अ0) असाधारण तेज के मालिक थे। इससे पता चलता है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) अरबों की इस आदत के अनुसार सम्बोधित करने वाले कुछ नये लोग थे, या उन्हीं पुराने लोगों में ऐसे थे, जो ज़ोर से बात करने लगे, पुकारने लगे, इसलिए कि अत्यधिक साथ रहने से संकोच मिट जाता है अतः बता दिया गया कि उनके सामने अपनी आवाज़ ऊंची न करो, बल्कि उनकी बात सुनो, वे तुम्हारे शिक्षक हैं, तुम्हारी हिदायत करने वाले हैं, तुम्हें उनसे कुछ लेना है।

इस आयतों में घर के बाहर से पुकारने की जो बात कही गई है, रसूलुल्लाह (स0अ0) के साथ तो उसका लिहाज़ रखना आवश्यक ही था, मगर यूं भी साधारण मनुष्यों के साथ भी इसको ध्यान में रखना चाहिए। कभी–कभी हमारे समाज में ऐसा होता है कि लोग किसी के दरवाज़े पर ज़ो–ज़ोर से पुकारते हैं, न जाने वह व्यक्ति अन्दर किस हालत में हो, लेकिन बाहर वाला व्यक्ति इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं करता है, जबकि यह अशिष्टता की बात है कि मनुष्य अन्दर से कोई जवाब न मिलने के बावजूद भी आवाज़ लगाता रहे। शिष्टता तो यह है कि मनुष्य बाहर खड़े होकर उत्तर की प्रतीक्षा करे या उसके निकलने की प्रतीक्षा करे। जिनसे मिलना है उनके समय को देखे कि उनका कौन सा समय खाली है, उस समय उनसे बात करे। सच बात तो यह है कि आज यह इस्लामी सभ्यता मुसलमान के पास से समाप्त होती जा रही है। मुसलमानों का हाल यह हो गया है कि उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं होती, केवल अपने काम से काम रहता है, दूसरा आदमी किस हालत में हो इसका कोई ध्यान नहीं रहता है। बिना किसी झिझक के अन्दर घुसते चले आते हैं, जिस पर कभी–कभी अन्दर वाले व्यक्ति को शर्मिन्दगी भी हो जाती है। अन्दर वाला व्यक्ति कपड़े पहन रहा हो, या इस्तिन्जाख़ाने (शौचालय) में हो या अपने किसी और निजी कार्य में व्यस्त हो और कोई दूसरा व्यक्ति बाहर से उनको आवाज़ दिये चला जाए या बिना आज्ञा के अन्दर घुसता चला आए यह सब ग़ैर इस्लामी तरीक़े हैं। इसीलिए अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इस बात को महत्व देकर वर्णित किया है ताकि सभी लोग रसूलुल्लाह (स0अ0) के सम्मान के साथ छोटे–बड़े के अन्तर को भी समझ सकें। किस अवसर पर क्या बात कही जाए, किस अवसर पर किसको अपनी आवश्यकता बताई जाए, किस अवसर पर आदमी को बुलाया जाए, इन सब चीज़ों का ध्यान हो सके, यदि इन सब चीज़ों की ओर ध्यान नहीं जाता तो फिर आदमी अनजाने में न जाने किस–किस तरह से लोगों को तकलीफ़ पहुंचाता है।

पश्चिमी मीडिया और मुसलमान

मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

पश्चिमी मीडिया और इस्लाम विरोधी साहित्य के अध्ययन से इस्लाम और मुसलमानों के भविष्य को लेकर चिन्तित होना स्वाभाविक है। पश्चिमी देशों का इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बर्ताव जुनूनी (उन्मादी) हालत में परिवर्तित होता जा रहा है। कुछ लोग इसको 'इस्लामोफ़ोबिया' का नाम देते हैं, तो कुछ लोग इसे 'हिस्टीरिया का दौरा' बताते हैं। स्थिति यह है कि मुस्लिम नवयुवकों के ख़िलाफ़ आतंकवाद के आरोप या इस्लामिक आंदोलन से संबंधों के आधार पर स्वयं मुस्लिम देशों में कठोर कार्यवाहियां की जा रही हैं और मीडिया का सहारा लेकर सुबह से शाम ऐसे दृश्य दिखाए जा रहे हैं और ऐसी घटनाएं प्रस्तुत की जा रही हैं जिनसे मुसलमानों के बारे में ग़लत विचारों की स्थापना हो और वे एक जाहिल और वहशी क़ौम की हैसियत से दुनिया के सामने आएं। यह एक ही फ़िल्म है जो बार–बार दिखाई जा रही है और उसके द्वारा पतन, पराजय, स्वार्थ और उदासी की भावना उत्पन्न करने की एक योजना बनाने का प्रयास हो रहा है, जिसके प्रभाव स्पष्ट रूप से अनुभूत किये जा सकते हैं। इन दृश्यों को देखकर और इन ख़बरों को पढ़कर हर ईमान वाले के दिल में उदासीनता की भावना जन्म लेती है। लेकिन ख़ुशी की बात यह है कि इन कठोर, कष्टदायी, उदासीन एवं हताश परिस्थितियों में भी बहुत ही तीव्र गति से ऐसी ख़बरें प्रकाशित हो रही हैं और ऐसी रिपोर्टें सामने आ रहीं है, जो इस हार में छिपी हुई जीत की तरफ़ स्पष्ट रूप से इशारा कर रही हैं और मायूसी को उम्मीद में, तकलीफ़ को राहत में और दुख को सुख में बदल रही हैं। अब उन साहसी जांबाज़ों की क़ुर्बानियां रंग ला रही हैं और उनके प्रयासों के परिणाम सामने आ रहे हैं। वह दीन जिसके वर्चस्व के लिए तन, मन, धन का त्याग किया गया था वह दीन अब हावी हो रहा है और उसका क्षेत्र बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है। यह कोई ख़्वाब नहीं, तमन्नाओं व आरज़ुओं का प्रदर्शन नहीं बल्कि वह वास्तविकताएं एवं घटनाएं हैं, जिनसे पूरा यूरोप बेचैन व विचलित है क्योंकि वह इन घटनाओं के संदर्भ में अपनी सीमाओं को समेटते, आबादी को घटते, नस्ल को समाप्त होते, अपने ही लोगों को विरोध करते और इस्लाम की ओर विश्वास के साथ क़दम बढ़ाते देख रहा है।

फ़्रांसीसी गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार फ़्रांस में इस्लाम स्वीकार करने वालों की संख्या तीन हज़ार छः सौ व्यक्ति प्रतिवर्ष है। गृह मंत्रालय का यह भी कहना है कि यह नवमुस्लिम फ़्रांसीसी नमाज़ और रोज़े की पाबन्दी के साथ शराब और दूसरी नशे की चीज़ों से बिल्कुल दूर रहते हैं और देश के क़ानूनों का पूरा ध्यान रखते हैं।

इंग्लैण्ड के गृह मंत्रालय ने मुसलमानों के बारे में बयान देते हुए कहा कि 2001ई0 में इंग्लैण्ड में मुसलमानों की संख्या सोलह लाख थी जो अब बढ़कर बीस लाख हो चुकी है। केवल इंग्लैण्ड में मुसलमानों की संख्या में चार लाख से अधिक की बढ़ोत्तरी हुई है।

लैटिन अमरीका में इस्लाम क़ुबूल करने वालों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। ब्राज़ील में मुसलमान अस्सी लाख से अधिक हैं। यूरोप की ओछी हरकतों और अज्ञानता पर आधारित ख़ाकों (कार्टूनों) ने लोगों को इस्लाम का अध्ययन करने और उसकी वास्तविकता को समझने में बड़ा किरदार अदा किया और यही अध्ययन उनके इस्लाम को स्वीकार करने का कारण बन रहा है।

इंग्लैण्ड में किये गए एक ताज़ा–तरीन सर्वे से यह बात सामने आयी है कि जुमे के दिन मस्जिद में आने वालों की संख्या इतवार को कैथोलिक चर्च में हाज़िरी देने वाले कैथोलिक ईसाइयों से कहीं अधिक है। आश्चर्य की बात यह है कि इंग्लैण्ड में बन्द होने वाले चर्चों की संख्या बढ़ती जा रही है। बन्द होने वाले चर्चों की संख्या के अनुसार 60 चर्च सालाना बन्द हो रहे हैं। इंग्लैण्ड ही में एक हज़ार चर्च ऐसे हैं जिनमें इतवार को इबादत (उपासना) के लिए आने वालों की संख्या ज़्यादा नहीं होती। एक रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ है कि यदि उन उपरोक्त एक हज़ार चर्चों में आने वालों की संख्या इसी प्रकार घटती रही तो ख़तरा है कि यह चर्च भी जल्दी बन्द हो जाएंगे, जबकि मुसलमानों के बारे में रिपोर्ट का यह दावा है कि 2020 ई0 तक मस्जिदों में आने वालों की संख्या चर्चों में आने वालों के मुक़ाबले में दोगुनी हो जाएगी। रिपोर्ट में इस पर भी अफ़सोस ज़ाहिर

किया गया है कि वर्तमान जनगणना के अवसर पर रिपोर्ट खुली की धर्म के ख़ाने में ईसाइ लिखवाने वालों की संख्या जो कुछ साल पहले तक 72 प्रतिशत थी, अब घटकर 35 प्रतिशत रह गई है। ईसाइ नवयुवकों का अपने धर्म से उदासीनता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि चर्च में आने वालों की औसत उम्र 64 साल है, जबकि मस्जिदों में नमाज़ के लिए आने वालों की संख्या अधिकतर नवजवानों पर आधारित है।

डेनमार्क जो इस्लाम से दुश्मनी की सारी सीमाएं लांघ गया, खुद ईसाइयत की क़त्लगाह बना हुआ है। चर्चों को बेचना वहां एक बीमारी बन गई है। बहुत से ईसाइयों के कथनानुसार ईसाइयों के अगर यह चर्च न बेचे गये तो लगातार ख़ाली रहने के कारण यह भूतों का अड्डा व मुजरिमों का अड्डा बन जाएंगे अतः उनको बेचना बेहतर है।

डेनमार्क चर्च कमेटी के बयान के अनुसार चर्चों में 82 प्रतिशत लोगों का रजिस्ट्रेशन है और हाज़िरी केवल आठ प्रतिशत है। कमेटी की ओर से इन चर्चों के बारे में एक पेशकश यह भी रखी गयी है कि अगर उन चर्चों में इबादत नहीं की जा रही है तो उनको अस्तबल बना दिया जाए या म्यूज़ियम बना दिया जाए या फिर सिनेमाहाल के तौर पर उनका प्रयोग किया जाए, लेकिन इनको मुसलमानों के हाथों न बेचा जाए क्योंकि यह चर्चों की तौहीन के बराबर है।

दूसरी ओर यूरोप एक और समस्या का सामना कर रहा है जिसके कारण वह अपने भविष्य के प्रति चिन्तित है। वह समस्या है जन्म अनुपात में कमी की। यूरोप में बूढ़ों की संख्या बढ़ती जा रही हैं और बच्चों की संख्या घट रही हैं जबकि यूरोप में रहने वाले मुसलमानों का जन्म अनुपात अपनी जगह पर ठीक है।

एक तीसरी समस्या जो यूरोप के लिए गंभीरता का कारण बनी हुई है वह यह है कि रोज़गार की तलाश में इस्लामी देशों के हालात ख़राब होने के कारण बड़ी संख्या में प्रशिक्षित मुस्लिम नवयुवक पलायन करके यूरोप जा रहे हैं। यूरोप की समस्या यहां इस कारण और बढ़ जाती है कि वह प्रशिक्षित मुस्लिम नवयुवकों को इस्लामी देशों में रहने नहीं देना चाहता क्योंकि उससे उसके देश को ताक़त मिलती है। साइंस और तकनीकी के क्षेत्र में उन्नति की राहें खुलती हैं और वे विकसित देशों की हैसियत से दुनिया के सामने आ सकते हैं अतः ऐसे व्यक्तियों को अपने यहां बुलाकर उनकी योग्यताओं से फ़ायदा उठाना चाहता है या फिर उनको तड़ीपारी का जीवन जीने पर मजबूर करके उनको मुस्लिम देशों के लिए प्रभावहीन बना देना चाहता है।

अब देखना यह है कि निम्नलिखित तीन समस्याओं से यूरोप कैसे निपटता है:

1– मुसलमानों के जनसंख्या अनुपात में कमी लाना।

2– इस्लामी देशों से मुस्लिम नवयुवकों को आने से रोकना।

3– इस्लाम कुबूल करने के बढ़ते हुए रूझान को क़ाबू में करना।

इस समय की जो परिस्थितियां हैं और इनको हल करने में यूरोप को जिस प्रकार नाकामी का सामना करना पड़ा है, उससे ईसाइ दुनिया के मुस्लिम दुनिया में परिवर्तित होने की संभावनाएं दिख रही हैं और यह बात निसंदेह एक खुशी की बात है। कुरआन करीम की यह आयत इस समय बिल्कुल परिस्थिति के अनुकूल है:

"हो सकता है कि जो चीज़ तुम नापसंद कर रहे हो वही तुम्हारे लिए बेहतर निकले।"

एक बात यह भी ध्यान में रखने की है कि यूरोप के लोगों के स्वभाव में जिज्ञासा है। वे वास्तविकता को जानना समस्या को समझना चाहते हैं। किताबें ख़रीदते हैं और पढ़ते हैं और सही परिणाम तक पहुंचकर अपने जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। अपमानजनक कार्टूनों और इस्लाम से दुश्मनी पर आधारित फ़िल्मों के आने के बाद इस्लाम से संबंधित किताबों की ख़रीदारी जो एक रिकार्ड है, इस बात का खुला प्रमाण है। यूरोप में पढ़ने का यही रूझान यूरोपियन नागरिकों के लिए इस्लाम कुबूल करने की राह आसान करता है, लेकिन हमारे देश की स्थिति कुछ अलग है, यहां न पढ़ने का शौक़ है न ख़रीदने की ज़्यादा गुंजाइश, और न ही जानने, समझने व निर्णय लेने वाला स्वभाव, अतः यहां हमें स्वयं कोशिश करनी होगी। हमें घर–घर पहुंचना होगा, लोगों से मिलकर इस्लाम का परिचय कराना होगा, इस्लामी चरित्र का नमूना पेश करके इस्लाम के बारे में फैली ग़लतफ़हमियों को दूर करना होगा, तब उम्मीद है कि यहां की स्थिति भी बदलेगी।

सहनशीलता एवं सहिष्णुता

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

अल्लाह तआला ने मनुष्य को भिन्न–भिन्न विशेषताएं दी हैं और उसको विभिन्न गुणोंवाला बनाया है। एक ओर तो उसके स्वभाव में नर्मी रखी है तो दूसरी ओर उसके स्वभाव में सख़्ती भी रखी है। एक ओर गुस्सा करने की योग्यता दी है तो दूसरी ओर गुस्से को क़ाबू में रखने की योग्यता भी दी है और क्योंकि अल्लाह तआला ने मनुष्य को मिट्टी से बनाया है और उसके लिए मिट्टी समस्त संसार से ली गई है और उसके बाद हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) के पुतले को तैयार किया गया है, अतः मिट्टी के अन्दर जितने गुण हैं वे समस्त गुण मनुष्य के अन्दर भी पाये जाते हैं। जैसे कि कहीं कि मिट्टी बिल्कुल नर्म होती है तो कहीं की मिट्टी सख़्त और पथरीली होती है, इसी प्रकार मनुष्य के भीतर भी यह दोनों विशेषताएं पायी जाती हैं। इसीलिए बहुत से लोग अत्यधिक कठोर होते हैं और बहुत से कोमल स्वभाव के होते है। इसी प्रकार बहुत से क्षेत्रों की मिट्टी बहुत सूखी होती है लेकिन बहुत से इलाक़ों की मिट्टी बहुत मुलायम होती है जहां पानी के स्रोत निकलते हैं और बड़ी–बड़ी नदियां बहती हैं बिल्कुल ऐसे ही बहुत से लोगों का स्वभाव कठोर होता है लेकिन बहुत से लोग अत्यन्त मधुर स्वभाव के होते हैं, जिस मधुरता व कोमलता के कारण उनकी आंखों से आंसू जल्दी निकल आते हैं और आंसुओं के इन्सान की मिट्टी को तर करने के कारण उसका दिल भी अल्लाह के प्राणियों के लिए नर्म पड़ जाता है। संक्षेप में यह कि मनुष्य के भीतर अल्लाह तआला ने असाधारण योग्यताएं रखी हैं लेकिन उसके साथ–साथ उनको प्रयोग करने का ढंग भी बता दिया है कि जहां नर्मी दिखाने की ज़रूरत हो वहां नर्मी दिखानी चाहिये और जहां सख़्ती दिखाने की ज़रूरत हो वहां सख़्ती भी दिखानी चाहिये। लेकिन यदि कोई मनुष्य इसके विपरीत नर्मी की जगह सख़्ती और सख़्ती की जगह नर्मी अपनाता है तो इसके परिणामस्वरूप वह कमज़ोर हो जाएगा। इसीलिए जिस व्यक्ति को उन दोनों चीज़ों के प्रयोग का उचित तरीक़ा मालूम हो जाए, वास्तव में उसी व्यक्ति के संबंध में कुरआन मजीद और रसूलुल्लाह (स0अ0) की हदीसों में आता है कि उस व्यक्ति को अल्लाह तआला ने भलाई से नवाज़ा है।

यद्यपि दोनों प्रकार की योग्यताओं के इस्तेमाल का तरीक़ा रसूलुल्लाह (स0अ0) के जीवन में उनकी अमली ज़िन्दगी का नमूना दिखाकर प्रस्तुत कर दिया गया, जिससे बढ़कर कोई नमूना नहीं हो सकता, क्योंकि यदि आपके जीवन में यह नमूना न दिखाया जाता और केवल उसके इस्तेमाल का आदेश दिया जाता तो बहुत से लोग केवल नर्मी को ही अस्ल समझते और बहुत से लोग सख़्ती करना ही उचित समझते।

अल्लाह के रसूल (स0अ0) के बारे में आता है कि आप कभी गुस्सा नहीं हुए केवल उस समय के जब कोई अल्लाह की शरीअत के मुक़ाबले में आ जाए। इससे पता चलता है कि गुस्सा एक स्वाभाविक चीज़ है जिसको जड़ से ख़त्म करना भी अनुचित है, यद्यपि यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने गुस्से को सही दिशा दे सके, न कि हर जगह गुस्सा ही करे बल्कि जो अवसर ऐसे हों जहां अल्लाह की शरीअत पर आंच आने का ख़तरा हो वहां पर गुस्सा दिखाना ज़रूरी होता है और यदि किसी को ऐसे अवसर पर गुस्सा न आये तो सही अर्थों में वह मनुष्य नहीं है। क्योंकि यह इन्सान के ज़मीर (अन्तरात्मा) के मुर्दा हो जाने की पहचान है कि उसके सामने रसूलुल्लाह (स0अ0) की शान में गुस्ताख़ी (अशिष्टता) की जाए और उसको गुस्सा तक न आये।

कई बार कुछ लोग अपनी मर्दान्गी जताने के लिए ऐसे वाक्य का प्रयोग करते हैं, जो बहुत ही अनुचित होते हैं, जैसे: "मैं अपने गुस्से को पी नहीं पाता हूं" "जब मुझे गुस्सा आता है तो कोई चीज़ मेरे सामने टिक नहीं सकती है" इस्लामी शरीअत के अनुसार ऐसे वाक्य कहना मर्दान्गी के बिल्कुल विपरीत है क्योंकि मर्द की यह शान नहीं है कि वह यह मजबूरी दिखाए कि यह मुझसे नहीं हो सकता है, बल्कि अल्लाह तआला ने मर्द के अन्दर ऐसी ताक़त व क्षमता रखी है कि कोई चीज़ दुनिया में ऐसी नहीं है जिसको मनुष्य अपने अधीन न कर सकता हो।

आजकल के मुसलमानों का हाल तो यह है कि सारी मर्दान्गी को यूरोपीय विचारों के कारण दीमक लग चुका है। .....(शेष पेज 12 पर)

वास्तविक प्रेम

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुहब्बत का संबंध दिल से होता है। यह कभी स्वभाविक होती है और कभी स्वैच्छिक होती है। आदमी स्वयं अपने दिल में महसूस करता है। इसके लिए इसको किसी मेहनत की ज़रूरत नहीं पड़ती। एक पिता को अपनी संतान से, अपने बेटे–बेटी से मुहब्बत होती है। माता को अपनी संतान से मुहब्बत होता है। यह ख़ून के रिश्ते हैं इन रिश्तों में अल्लाह तआला ने स्वाभाविक रूप से मुहब्बत रखी है। यह स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी। अगर यह मुहब्बत न होती तो दुनिया की सारी व्यवस्था जो हमें नज़र आ रही है, यह सारी व्यवस्था फ़ेल हो जाती।

माता–पिता को संतान से जो मुहब्बत होती है उसी मुहब्बत के कारण वे उसकी चिंता करते हैं, प्रशिक्षित करते हैं, सारी तकलीफ़ें उठाते हैं, और ऐसी–ऐसी परेशानियां बर्दाश्त करते हैं कि यदि वह किसी दूसरे की औलाद हो तो शायद बर्दाश्त करना संभव न हो। रातों को बच्चा परेशान करता है, रोता है, पूरी–पूरी रात मां उसको टहलाती है, और ख़ुद परेशान हो जाती है, बाप परेशान हो जाता है, यह एक स्वाभाविक प्रेम के कारण है। यदि वह न होता तो शायद गुस्से में आकर वह बच्चे को ज़मीन पर पटख़ देती कि उसने हमें मुसीबत में डाल दिया, परेशान कर दिया, हमारी नींद उड़ा दी, लेकिन अल्लाह ने मुहब्बत के अन्दर जो विशेष गुण रखा है उसका परिणाम यह है कि वह सबकुछ बर्दाश्त करती है, यह ख़ून के रिश्ते का नतीजा है।

यह जो स्वाभाविक मुहब्बत है उसका यह एक विशेष कारण है। अल्लाह ने वह विशेषता समाहित कर दी है। वह कोई भी मां हो उसमें यह बात है ही नहीं कि वह अमुक धर्म की है तो मुहब्बत है, अमुक परिवार की है तो मुहब्बत है, यदि वह वास्तव में इन्सान है, उसके अन्दर ज़रा सी भी इन्सानियत है तो उसको मुहब्बत होती है लेकिन आज हमारे इस दौर में स्थिति इतनी बदतर होती जा रही है कि अब आदमी इन्सानियत से भी नीचे की सतह पर आ गया है और ऐसी घटनाएं होती रहती हैं कि माता–पिता को जो स्वाभाविक प्रेम होता है अपनी संतान से, लेकिन अब बहुत सी जगहों पर वह स्वाभाविक मुहब्बत भी देखने को नहीं मिलती, इसलिए कि स्वभाव बिगड़ गया है। जब कर्म बिगड़ते हैं तो बिगड़ते–बिगड़ते स्थिति यह होती है कि मनुष्य की प्रकृति बिगड़ जाती है। मनुष्य मनुष्य नहीं जानवर बन जाता है, अपनी औलाद के साथ कई बार वह ऐसा काम करता है कि पहले शायद इसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था।

एक साहब ने यूरोप की घटना के बारे में बताया, जहां जीवन मशीनी हो गया है और मानवीय भाव समाप्त होते जा रहे हैं। उनका कल्चर ऐसा ठन्डा है कि उनके दिल व दिमाग़ सब ठन्डे हो गये हैं। मुहब्बत की जो गर्मी होती है, लगता है वह उनके अन्दर जम सी गयी है। उनके दिमाग़ों की सभी जालियां जम गई हैं। उनको किसी दर्द का एहसास नहीं होता। ऐसा लगता है कि उनके दिल छीन लिये गये हैं, केवल दिमाग़ रह गया है। उनके सारे काम दिमाग़ से होते हैं। जैसे मशीन होती है यूरोप की बिल्कुल वही स्थिति है कि वे मशीन की भांति काम करते हैं, लेकिन उनके अन्दर की जो भावनाएं हैं वह लगता है कि बिल्कुल ठन्डी हो गई हैं। वहीं की घटना किसी ने बतायी कि माता–पिता अपने छोटे से बच्चे को लेकर शापिंग के लिए किसी बड़े शापिंग माल में गए। बच्चा रोएगा, इसको कहां तक संभालेंगे, यह सोचकर वे इतने पत्थरदिल हो गए कि जो उन्होंने किया वैसा कोई माता–पिता नहीं कर सकते। उन्होंने ऐसा किया कि बच्चे को किसी तरह थपकी इत्यादि देकर गाड़ी में ही सुला दिया और गाड़ी लाक कर दी। उसके बाद वे माल चले गये। वहां घूमने–फिरने व शापिंग करने में उन्होंने घन्टों लगा दिये, बच्चा उठ गया था, वह रोया, चिल्लाया, इत्तेफ़ाक़ ऐसा हुआ कि गाड़ी के अन्दर ऑक्सीजन की कमी हुई तो दम घुटने से वह बच्चा मर गया। जब उन्होंने आकर देखा तो बच्चा मर चुका था। वहां इस प्रकार की बहुत सी घटनाएं होती रहती हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि बच्चे न हों तो उन्हें अधिक प्रसन्नता होती है और यदि मर जाएं तो शायद और ज़्यादा ख़ुशी होती होगी, इसलिए कि उनका हाल यह है कि उनको केवल अपनी चिन्ता है। खाने का स्वाद मिलता रहे, आज़ादी मिलती रहे, कोई मामूली रुकावट भी न हो, अगर घर में बच्चा रहेगा तो ज़िन्दगी में आज़ादी नहीं रहेगी, तो वे इस स्तर तक गिर गये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका स्वभाव बिगड़ता चला जा रहा है। अफ़सोस की बात है कि वही कल्चर अब पूर्वी देशों में भी आ रहा है।

यहां मशहूर था कि एक बेटे ने किसी कारणवश अपनी मां की हत्या कर दी। हत्या करके वह भागा जा रहा था, कहीं ठोकर लगी वह गिर गया, तो मां के दिल से आवाज़ आई के बेटे चोट तो नहीं लगी। यह बस एक कहानी है, लेकिन इससे यहां के स्वभाव को समझा जा सकता है। पूर्वी देशों का यही स्वाभाव था। लेकिन अब आप यहां देखिये अख़बारों में ऐसी ख़बरे आती हैं कि मां ने अपने बेटे को मार दिया, ऐसा सोचा नहीं जा सकता था, लेकिन अब ऐसी ख़बरें आती हैं, यह मानवता के पतन का अन्तिम चरण है कि माता–पिता को अपनी औलाद से मुहब्बत न हो। यह बिल्कुल अस्वाभाविक बात है।

अल्लाह तआला ने मनुष्य के स्वभाव में यह चीज़ रखी है कि ख़ूनी रिश्तों के आधार पर जो रिश्ता जितना क़रीबी होता है उस निकटता के आधार आदमी के अन्दर मुहब्बत का एक जज़्बा होता है और वह स्वाभाविक होता है कि उसमें कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती। वह मजबूरी है यानि ऐसा जज़्बा है जैसे भूख होती है, प्यास होती है। जब भूख लगती है तो आदमी खाना खाता है और जब प्यास लगती है तो आदमी पानी पीता है। इसी तरह अल्लाह ने मनुष्य के अन्दर एक ख़ास जज़्बा रखा है एक विशेष भाव रखा है कि आदमी उसे महसूस करता है। जब बच्चा रोएगा तो मां मजबूर हो जाएगी जैसे प्यास पर आदमी पानी पीने पर मजबूर हो जाता है। वह उसकी ज़रूरत बन गई। बात केवल बच्चे की ज़रूरत की नहीं रह गई, बल्कि वह मां की खुद ज़रूरत बन गई, यह अल्लाह ने व्यवस्था बनाई है, अगर यह न होता तो माएं अपने बच्चों को कहीं डाल आतीं और अब जो इस प्रकार की घटनाएं होती हैं, इसका कारण यही है कि यहां वेस्टर्न कल्चर आ गया है। इसके परिणाम इस समय हमारे सामने आ रहे हैं। यह तो मुहब्बत है जो अल्लाह ने फ़ितरत में रखी है, इसको भी जो मां होती है उसको अपने बच्चे पर कुछ न कुछ प्यार आता है।

अल्लाह फ़रमाता है कि उसने मुहब्बत के सौ भाग किये। निन्यानवे भाग अल्लाह ने अपने पास रखे और एक हिस्सा सारी दुनिया में बांट दिया जिसके नतीजे में हर मां अपनी औलाद से मुहब्बत करती है। हर बाप अपनी औलाद से मुहब्बत करता है। हर मुहब्बत करने वाला दूसरे से मुहब्बत करता है। यहां तक कि जानवर को भी अपनी औलाद से कुछ न कुछ मुहब्बत होती है।

मुहब्बत की एक दूसरी क़िस्म है इसको अक़्ली मुहब्बत कहते हैं। इसलिए कि यह सोच–समझकर पैदा की जाती है। इसके कारण होते हैं। उन कारणों पर जब आदमी विचार करता है तो मुहब्बत पैदा होने लगती है। कभी–कभी वह बहुत जल्द ही दिमाग़ पर हावी हो जाती है और जब हावी हो जाती है तो ज़्यादा मेहनत की ज़रूरत नहीं रहती, मुहब्बत अपनेआप उसके दिल में घर में बना लेती है और कभी–कभी यह होता है कि उसके दिमाग़ पर वह चीज़ हावी करनी पड़ती है और हावी करने के बाद वह मुहब्बत में बदल जाती है।

मुहब्बत के इस दूसरे प्रकार के चार कारण बताए जाते हैं। वह मुहब्बत या तो सुन्दरता के आधार पर होती है, या एहसान के आधार पर, किसी ने किसी पर एहसान किया तो मुहब्बत पैदा होती है, या वह मुहब्बत जो पैदा होती है, या किसी के अन्दर किसी तरह की विशेषता होती है, या कोई बड़ा माहिर होता है और उस फ़न की वजह से आदमी के अन्दर एक आकर्षण पैदा हो जाता है। कई बार कोई इल्म के एतबार से बड़ा होता है उससे लोगों का संबंध हो जाता है कि वह बड़ा माहिर आदमी है। आजकल तो यह हाल हो गया है कि खेल को भी लोगों ने कमाल व हुनर समझ लिया है और उस हुनर के आधार पर लोगों के दिलों के अन्दर मुहब्बत पैदा हो जाती है। अल्लाह ने हर मनुष्य को अलग–अलग स्वभाव दिया है। किसी का स्वभाव ऐसा होता है कि सुन्दरता से अधिक प्रभावित होता है। किसी का स्वभाव ऐसा होता है कि हुनर से अधिक प्रभावित होता है। किसी का स्वभाव ऐसा होता है कि उसके अन्दर एहसान मानने की ज़्यादा आदत होती है। तो यह विभिन्न स्वभावों का जो अन्तर है, उसके आधार पर वह मुहब्बत दिल में आयी है। कुछ लोग एहसान न मानने वाले होते हैं। आप उन पर पूरी दुनिया न्योछावर कर दीजिए, आप खुद दीवाने हो जाएं, लेकिन उन पर लगता है कोई असर ही नहीं पड़ा। वे ऐसे होते हैं कि बिल्कुल लगता है कि उनके सामने सब बराबर हैं, जैसे कोई पत्थर की दीवार हो। आप कोई बड़ी से बड़ी चीज़ दिखाइये उन पर असर ही नहीं पड़ेगा और बहुत से ऐसे होते हैं कि वे देखते ही खिल जाते है। तो यह अलग–अलग स्वभाव होता है और आदमी अपने स्वभाव से मजबूर होता है। स्वभाव के आधार पर कभी–कभी यह जो मुहब्बत पैदा होती है, यह करने की ज़रूरत नहीं पड़ती, यह खुद ही पैदा हो जाती है। यह स्वैच्छिक मुहब्बत होती है, स्वाभाविक नहीं होती है, अपितु इन कारणों की वजह से पैदा हो जाती है।

नफ़्ल नमाज़ की फ़ज़ीलत व उनके एहकाम

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

तहज्जुद की नमाज़: रसूलुल्लाह (स0अ0) को तहज्जुद का हुक्म खुद कुरआन मजीद में दिया गया है: "रात को तहज्जुद पढ़िए अपने लिए नफ़्ल के तौर पर" नफ़्ल नमाज़ों में तहज्जुद की नमाज़ फ़ज़ीलत में सबसे बढ़कर है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया: "फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफ़ज़ल नमाज़ तहज्जुद की नमाज़ है" (मुस्लिम) एक दूसरी हदीस जिसकी रिवायत हज़रत अमामा (रज़ि0) से है, उसमें रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इरशाद फ़रमाया: "तुम रात वाली नमाज़ को ज़रूरी समझो, इसलिए कि यह तुमसे पहले के नेक लोगों का तरीक़ा रहा है और यह अल्लाह के क़रीब होने का ज़रिया है, गुनाहों से माफ़ी का ज़रिया है और बुराइयों से रोकने का कारण है।" (तिरमिज़ी)

इस वक़्त अल्लाह तआला की रहमत जोश में होती है और दुआएं कुबूल की जाती हैं। इसीलिए हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया: "जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है तब हमारा रब दुनिया के आसमान पर आता है और कहता है: कौन है जो मुझसे मांगे और मैं उसको अता करूं, कौन है जो मुझसे मग़्फ़िरत चाहे और मैं उसकी मग़्फ़िरत करूं। (मुत्तफ़िक अलैह)

तहज्जुद का वक़्त: तहज्जुद का अफ़ज़ल वक़्त सोकर उठने के बाद आधी रात या रात का आख़िरी वक़्त है, इसलिए कि तहज्जुद का अर्थ ही नींद कुर्बान करने के हैं। लेकिन अस्ल में इसका वक़्त इशा के वक़्त से फ़ज्र के वक़्त तक रहता है, लिहाज़ा अगर किसी की आंख सोने के बाद आधी रात या उसके बाद न खुलती हो तो उसको चाहिए कि इशा की फ़ज़्र नमाज़ के बाद वित्र से पहले क़यामुल्लैल की नियत से दो रकआत या अगर उससे ज़्यादा की तौफ़ीक़ मिले तो उससे ज़्यादा पढ़ ले, इंशाअल्लाह उसको तहज्जुद का सवाब मिलेगा। (शामी)

तहज्जुद की रकआत: तहज्जुद की कम से कम दो रकआत हैं, बेहतर यह है कि कम से कम चार रकआत पढ़ी जाएं। जहां तक रसूलुल्लाह (स0अ0) के नियम का संबंध है तो आप ज़्यादातर आठ रकआत पढ़ा करते थे। कई हदीसों से इसका ज़िक्र मौजूद है। बहरहाल अगर दो रकआत भी नसीब हो जाएं तो इंशाअल्लाह नेक लोगों में गिना जाएगा। इसीलिए रसूलुल्लाह (स0अ0) से रिवायत है कि आपने फ़रमाया: "जो रात को जागे और अपनी बीवी को जगाए फिर दोनों दो रकआत नमाज़ पढ़ें तो उन दोनों को अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करने वाले मर्दों और औरतों में लिख दिया जाएगा। (नसाई, इब्ने माजा) (शामी, हिन्दिया)

चाश्त की नमाज़: हदीसों में चाश्त की नमाज़ की भी बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि0) फ़रमाते हैं: नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमाया: जो चाश्त की नमाज़ बारह रकआत पढ़े, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में सोने का महल बना देते हैं।" (तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

चाश्त की नमाज़ की रकआत: बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसों में चाश्त की दो से लेकर बारह रकआत तक साबित हैं। (मिश्कात)

अगर कोई दो रकआत भी पढ़ ले तो इंशाअल्लाह उसको चाश्त की नमाज़ का सवाब मिलेगा, लेकिन अफ़ज़ल यह है कि आठ रकआत पढ़ी जाएं और कमाल का अदना दर्जा यह है कि चार रकआत पढ़ी जाएं। (शामी)

चाश्त की नमाज़ का वक़्त: चाश्त की नमाज़ का वक़्त सूरज चढ़ने के वक़्त यानि निकलने के पन्द्रह–बीस मिनट से शुरू होकर ज़वाल के पहले तक रहता है। लेकिन इसका अफ़ज़ल वक़्त चौथाई दिन के बाद होता है, जब सूरज ख़ूब रोशन और चमकदार हो

जाए। (शामी)

इश्राक़ की नमाज़: हदीस में इश्राक़ की नमाज़ की भी फ़ज़ीलतें आयी हैं। हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि0) से रिवायत है, कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया: जो शख़्स जमाअत से फ़ज्र की नमाज़ पढ़े, फिर बैठकर अल्लाह का ज़िक्र करता रहे, यहां तक कि सूरज निकल आए, फिर दो रकआत नमाज़ पढ़े, तो उसको हज व उमरह का सवाब मिलेगा, फिर नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमाया: मुकम्मल हज व उमरह का, मुकम्मल हज व उमरह का, मुकम्मल हज व उमरह का। (तिरमिज़ी)

हज़रत अबूदरदा व अबूज़र (रज़ि0) नबी करीम (स0अ0) से हदीस–ए–क़ुदसी नक़ल करते हैं कि अल्लाह तआला अपने बन्दों को मुख़ातिब होकर फ़रमाता है: ऐ इब्ने आदम! तू दिन के शुरू हिस्से में मेरे वास्ते चार रकआत नमाज़ पढ़ लिया कर, मैं दिन के आख़िरी हिस्से तक तेरी किफ़ायत करता रहूंगा। (तिरमिज़ी)

इन हदीसों से मालूम हुआ कि इश्राक़ की नमाज़ दो रकआत या चार रकआत साबित हैं और इश्राक़ का वक़्त सूरज निकलने के पन्द्रह–बीस मिनट के बाद शुरू होता है। (अहसनुल फ़तावा)

अव्वाबीन की नमाज़ की फ़ज़ीलत: अव्वाबीन की फ़ज़ीलत बयान करते हुए रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया: जो शख़्स मग़रिब की नमाज़ के बाद छः रकआत नमाज़ पढ़ेगा और उनके बीच कोई ग़लत बात ज़बान से नहीं निकालेगा तो यह छः रकआत सवाब में उसके लिए बारह साल की इबादत के बराबर होंगी। (तिरमिज़ी)

हज़रत आयशा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमाया: जो मग़रिब की नमाज़ के बाद बीस रकआत नमाज़ पढ़ेगा, अल्लाह तआला जन्नत में उसके लिए ख़ास घर की तामीर करवा देते हैं। (तिरमिज़ी)

मालूम हुआ कि अव्वाबीन की नमाज़ कम से कम छः रकआत और ज़्यादा से ज़्यादा बीस रकआत हैं, अगर कोई पढ़ना चाहे तो मग़रिब के बाद वाली दो रकआत सुन्नत–ए–मोअक्कदा को भी उन छः या बीस में गिन सकता है। (शामी)

तहय्यतुल वुज़ू: इस नमाज़ की फ़ज़ीलत बयान करते हुए रसूलुल्लाह (स0अ0) फ़रमाते हैं: जो मुसलमान वुज़ू करे और अच्छी तरह वुज़ू करे और दो रकआत नमाज़ पढ़े, जिनमें मुकम्मल ख़ुशू व ख़ुज़ू (विनम्रता व लीनता) हो तो अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत लाज़िम कर देते हैं। (मुस्लिम)

इस नमाज़ का सही वक़्त यह है कि वुज़ू करने के बाद अंग सूखने से पहले–पहले इसको अदा कर लिया जाए। अगर वुज़ू करने के बाद मस्जिद में दाख़िल हुआ तो तहय्यतुल मस्जिद या तहय्यतुल वुज़ू की नियत से दो रकआत पढ़ लें या कोई सुन्नत या फ़र्ज़ शुरू कर दी तो इससे भी इंशाअल्लाह तहय्यतुल वुज़ू की नमाज़ हो जाएगी। (शामी)

तहय्यतुल मस्जिद: हज़रत अबूक़तादा (रज़ि0) से रिवायत है, फ़रमाते हैं: नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमाया: जब तुममें से कोई मस्जिद आए तो उसे चाहिए कि बैठने से पहले दो रकआत नमाज़ पढ़ ले। (तिरमिज़ी)

इसलिए अगर मस्जिद में दाख़िल हो तो सुन्नत यह है कि बैठने से पहले दो रकआत तहय्यतुल मस्जिद पढ़े, अगर बैठने के बाद पढ़े तब भी उसकी अदायगी हो जाएगी, लेकिन बैठने से पहले पढ़ना सवाब का काम है। पता चला कि लोगों ने जो मामूल बना रखा है कि मस्जिद में आकर पहले बैठ जाते हैं, फिर उठकर तहय्यतुल मस्जिद या सुन्नत पढ़ते हैं, यह इस्तिहबाब (सवाब) के ख़िलाफ़ हैं। अगर कोई मकरूह वक़्त जैसे फ़ज्र या अस्र के बाद मस्जिद में दाख़िल हो तो उस वक़्त तहय्यतुल वुज़ू या मस्जिद नहीं पढ़ी जाएगी, और मस्जिद में दाख़िल होने के बाद अगर कोई सुन्नत या फ़ज्र नमाज़ पढ़ ली तो वह तैहय्यतुल मस्जिद की क़ायम मक़ामी करेगी।

सलातुत्तस्बीह: हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) से रिवायत है नबी करीम (स0अ0) ने हज़रत अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब रज़ि0 ने फ़रमाया: चचा जान! क्या मैं आपको तोहफ़ा न दूं, हदिया न दूं, क्या आपको न बताऊं और क्या मैं आपके साथ न करूं ऐसी दस चीज़ें कि जब

आप उनको करेंगे तो अल्लाह तआला आपके अव्वल–आख़िर, पराने–नये, जानबूझ कर व आनजाने में किये गये, बड़े–छोटे, छिपे हुए और खुले हुए गुनाह माफ़ कर देगा? वह यह है कि आप चार रकआत नमाज़ पढ़ें, हर रकआत में सूरह फ़ातिहा और कोई दूसरी सूरह पढ़ें, फिर जब पहली रकआत में आप क़िरआत कर चुकें तो खड़े–खड़े पन्द्रह बार "सुब्हानल्लाहि वअल्हम्दुलिल्लाहि वलाइलाहा इल्लल्लाहु अल्लाहु अकबर" कहें, फिर रुकूअ करें, फिर रुकूअ की हालत में यही कलिमे दस बार कहें, फिर अपना सर उठाएं और दस बार कहें, फिर सजदा करें और दस बार कहें, फिर सजदे से सर उठाकर उनको दस बार कहें, तो यह हर रकआत में पचहत्तर तस्बीहात हो जाएंगी, अगर आप रोज़ाना पढ़ सकते हों तो पढ़ लिया करें, अगर न कर सकें तो हर जुमा को एक बार पढ़ लिया करें, अगर न कर सकें तो साल में एक बार पढ़ लिया करें, अगर न कर सकें तो उमर भर में एक बार पढ़ लें। (अबूदाऊद, इब्ने माजा, बैहिक़ी)

सलातुत्तस्बीह का दूसरा तरीक़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक से मरवी है, इसमें दो सजदों के बाद जलसा–ए–इस्तराहत नहीं हैं, इसकी जगह पर यह है कि सना पढ़ने के बाद क़िरआत से पहले पन्द्रह बार, फिर सूरह फ़ातिहा और सूरह मिलाने के बाद दस बार तस्बीह पढ़ी जाएं, इस तरह भी एक रकआत में पचहत्तर तस्बीह हो जाएगीं। (तिरमिज़ी)

लेकिन पहला तरीक़ा कई रिवायतों से साबित है।

सलातुत्तस्बीह किसी भी ग़ैर मकरूह वक़्त में पढ़ी जा सकती है, लेकिन ज़वाल के बाद पढ़ना अफ़ज़ल है। (शामी)

सलातुत्तस्बीह में किसी ख़ास सूरह को तय नहीं किया गया है। अलबत्ता फ़ुक़्हा (धर्मज्ञाताओं) ने उन सूरतों को अफ़ज़ल कहा है जिनकी शुरूआत में तस्बीह का ज़िक्र है जैसे सूरह हदीद, हश्र, सफ़ और सूरह जुमा इत्यादि। तस्बीहात ज़बान से गिनेंगे तो नमाज़ ख़राब हो जाएगी, लेकिन अगर याद न रहे तो यह कर सकता है कि उंगलियों को अपनी हालत में रखते हुए हर तस्बीह पर एक उंगली दबा दे। (शामी)

शेषः सहनशीलता एवं सहिष्णुता

उनकी सारी क्षमताएं केवल नाचने–गाने वालों को देखने में नष्ट हो रही हैं और परिणाम यह है कि मुसलमानों की इसी स्थिति पर यूरोप हंस रहा है कि हमारा तीर निशाने पर लगा है और उसने पूरे मुस्लिम समुदाय को बौद्धिक एवं वैचारिक रूप से कोरा कर दिया है।

इसलिए हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह अपने अन्दर कुछ करने का इरादा रखे और किसी मैदान में हिम्मत न हारे। क्योंकि यह मोमिन की मर्दान्गी के ख़िलाफ़ बात है। अल्लाह तआला ने इन्सान को मेहनत करने का हुक्म दिया है जिसके नतीजे निकालने पर ख़ुद अल्लाह तआला क़ादिर (सामर्थ्यवान) है, जो कि हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है और जो व्यक्ति अल्लाह के लिए मेहनत करने की सोच ले तो उसके लिए स्वयं राहें खुलती चली जाएंगी।

नर्मी के संबंध से विशेषतयः दावत (धार्मिक प्रचार–प्रसार) का काम करने वालों को इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि ऐसा बर्ताव करें कि लोगों का सुधार सरलता से हो जाए, लेकिन इसके साथ–साथ यह ज़रूरी है कि जहां सख़्ती करने का अवसर हो वहां सख़्ती भी करी जाए, क्योंकि यह दोनों मिसालें सहाबा के यहां मिलती हैं, लेकिन अस्ल यह है कि इन्सान ज़्यादा से ज़्यादा नर्मी अपनाए क्योंकि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अधिकतर मामलों में नर्मी ही को अपनाया है। क्योंकि जो लाभ नर्मी से संबंधित हैं वे सख़्ती पर नहीं हो सकते हैं, और अल्लाह इसमें बरकत भी अता फ़रमाता है, बताया गयाः अल्लाह तआला ख़ुद रफ़ीक़ (नर्म स्वभाव वाला) है, और नर्मी ही को पसंद करता है।

लेकिन ध्यान रहे कि नर्मी को परिस्थिति के अनुसार लागू किया जाता है, जैसेः हदीस में औरतों के साथ नर्मी का मामला अपनाने का आदेश दिया गया है जिसकी मिसाल शीशे से दी गई है तो जिस तरह शीशे की हिफ़ाज़त बहुत नाज़ुक तरीक़े से की जाती है उसी तरह औरतों के साथ व्यवहार भी नर्मी में शामिल है। इसी तरह कोई शख़्स जंग के मैदान में दुश्मन को अल्लाह के लिए मार रहा है तो उसके साथ नर्मी यह है कि उसकी शक्ल को न बिगाड़ा जाए, इसी तरह जानवर ज़िबह करते समय नर्मी यह है कि इन्सान तेज़ धार वाली छुरी से जल्दी ज़िबह करे, इत्यादि।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दावत का अंदाज़

डॉक्टर ख़ालिद मुश्ताक़

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के जीवन की विभिन्न घटनाएं हमें दावती ज़िन्दगी (इस्लाम का प्रचार/प्रसार) जीने के नियम बताते हैं। इन्हीं नियमों पर अमल करके हम अपनी दावती कार्यवाहियों को बेहतर और परिणामदायक बना सकते हैं।

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की घटनाएं कुरआन में आती हैं। वे एक ऐसे समुदाय व गिरोह के साथ रहे जो सितारों की पूजा करती थी। आप उनके साथ बैठते, वे सितारों की विशेषताओं का वर्णन करते कि वे रात को रोशनी देते हैं, अंधेरी रात में मार्गदर्शन करते हैं, उनके द्वारा हमें यह पता चलता है कि कौन सा रास्ता किस ओर है।

सितारों के द्वारा हज़ारों वर्षों तक मनुष्य दिशा निश्चित करते रहे हैं। सितारों को देखकर क़ाफ़िले रात में रेगिस्तान में सफ़र करते थे। यह वह वास्तविकताएं हैं जो बिल्कुल सही हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) धैर्य के साथ उनकी बातें सुनते, क्योंकि उनमें वास्तविकता भी थी लेकिन उसके साथ जो ग़लत परिणाम वे निकाल लेते थे वह यह था कि उन वास्तविकताओं के कारण हमें उनकी पूजा करनी चाहिए। जब सितारे डूब जाते तो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) उन्हें रद्द कर देते कि यह तो डूब गए, अब कौन मार्गदर्शन करेग? कौन उनको रास्ता दिखाएगा? उन्होंने इस बात की पड़ताल की तो पाया कि यह सच है।

इसी तरह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) चांद की पूजा करने वाले समुदाय के साथ रहे। उन्होंने दलील दी कि यह प्रकाशित है, इससे रात को रोशनी मिलती है, उसके घटने–बढ़ने से महीनों की तारीख़ों का अंदाज़ा होता है। इस प्रकार हम महीनों की प्लानिंग कर सकते हैं और जीवन की प्लानिंग करना आसान है। हम इसकी पूजा करते हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने धीरज के साथ उनकी दलीलें सुनी क्योंकि वे अल्लाह के नबी (संदेष्टा) थे, जानते थे कि यह सब ग़लत कह रहे हैं लेकिन चांद के जो फ़ायदे उन्होंने बताए वह सत्य थे, लेकिन पूजा वाली बात ग़लत थी। आपने उनकी बात सुनी, उनकी दलीलों के बाद ग़लत नतीजा जो उन्होंने निकाला यानि कि यह चांद रब है, सुना लेकिन ख़ामोश रहे। लेकिन जब चांद चला गया तो उन्होंने कहा कि यह तो चला गया, अब क्या होगा? दिन में तो यह कोई काम नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि आपकी यह बात तो सही है। आपने पहले उनको परखने और स्वयं अनुभव करने का अवसर दिया और फिर जब वे परख चुके तो उन्होंने बताया कि अस्थायी चीज़ रब (पालनहार) नहीं हो सकती।

इसी प्रकार हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) सूरज की पूजा करने वाले समुदाय के साथ रहे। सूरज को देखकर आपने उनकी इस बात का समर्थन किया कि यह तो वास्तव में बहुत बड़ा और प्रकाशवान है। उन्होंने बताया कि सूरज जीवन की समस्याएं हल कर सकता है। उसके प्रकाश से पौधों और खेतों को शक्ति मिलती है। सर्दी से हम बचते हैं, दिन–रात का पता चलता है। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उनके अनुभवों का समर्थन किया। लेकिन जब सूरज डूब गया तो आपने उन्हें कहा कि यह कहां गया? यह तो रात को नहीं होता, फिर यह एक अस्थायी चीज़ है। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) उनकी बातें सुनते रहे, उनके साथ थे, उनकी किसी बात का विरोध नहीं किया। उन्होंने भी आपकी बात सुनी और कहा कि यह तो ग़ायब हो गया।

आपने उनके अनुभवों के बाद उन्हें बताया कि मैं आप लोगों के भिन्न मत रखता हूं। जो चीज़ ग़ायब हो जाए वह रब (पालनहार) नहीं हो सकती। रब तो ऐसा है जो हर समय मौजूद हो।

कुरआन मजीद में अल्लाह ने वाक़्या बयान किया कि यह हमारी हिदायत के लिए मार्गदर्शक नियम बताता है। यदि हमें किसी समुदाय, गिरोह अथवा व्यक्ति चाहे वह हमसे, हमारी बात–चीत से, हमारे दिमाग़ से, वर्तमान जीवन यापन के तरीक़े से, हमारे धर्म से कितना ही भिन्न मत रखता हो, उन सबसे और दूसरे लोगों से भी बात करने के सुनहरे उसूल हमें मिल गए। यह वे नियम हैं जिन पर अमल करके हम अपनी दावती ज़िम्मेदारी को पूरा कर सकते हैं। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) द्वारा दिये गए नियमः

1– दूसरे की बात चाहे कितनी ही ग़लत क्यों न हो धैर्य से सुननी चाहिए।

.....(शेष पेज 15 पर)

सीरिया में क़त्लेआम

मसऊद अबदाली

वैसे तो पूरा सीरिया बहुत ही बुरे हालात का सामना कर रहा है, मगर सीरिया का शहर हल्ब (Aleppo) इन दिनों वास्तवत में एक ऐसी क़त्लगाह बना है, जहां मासूम बच्चों का बड़ी बेदर्दी के साथ क़त्ल किया जा रहा है और दुनिया को इसकी कोई परवाह नहीं है। कुछ दिनों पहले सयुंक्त राष्ट्र में बिट्रेन के प्रतिनिधी मैथ्यू रेक्रोफ़्ट ने स्वीकार किया कि बश्शारुल असद के सैनिक घर–घर जाकर लोगों को खड़ा करके गोली मार रहे हैं। हल्ब (Aleppo) की रहने वाली और सी.एन.एन. की प्रतिनिधी करमुल मिस्री ने औरतों और बच्चों की लाशें अपनी आंखों से देखीं, जिन्हें सिपाहियों ने दूसरों के सबक़ के लिए घर की दहलीज़ पर डाल दिया है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि हल्ब (Aleppo) की गली–कूचे लाशों से भरे पड़े हैं। लेख लिखे जाने तक मरने वालों की संख्या का ठीक–ठीक अनुमान भी नहीं लगाया जा सका। हल्ब (Aleppo) की ऐतिहासिक उम्वी मस्जिद बमबारी का निशाना बनकर शहीद हो चुकी है। फ्रांस और इंग्लैण्ड की अपील पर सलामती कौन्सिल की विशेष सभा हुई, जिसे रूस ने वीटो कर देने की घोषणा पहले ही कर रखी थी। पत्थरदिल रूसी विदेश मंत्री सर्जीलावर्डो का कहना है कि हल्ब (Aleppo) में युद्धबंधी के लिए अमरीकियों की अपील सुन–सुन कर उनके कान पक गए हैं और अब आख़िरी "आतंकवाद" की समाप्ति तक युद्ध जारी रहेगा। रूसी विदेश मंत्री ने हल्ब (Aleppo) में घर–घर तलाशी अभियान में रूसी विशेषज्ञ सीरियन सेना की मदद कर रहे हैं। मारे जाने वाले अधिकतर "आतंकवादियों" की उम्र एक सप्ताह से एक साल तक है। कुछ दिनों पहले केवल एक ही मुहल्ले में 82 बच्चों की लाशें उनके खन्डहर बन चुके घरों के बाहर पड़ी पाई गईं। कुछ दुधमुंहों के नन्हे–नन्हे सर फ़ौजियों के बूटों से कुचले हुए थे। हल्ब (Aleppo) के इस मुहल्ले का दौरा करने के बाद सयुंक्त राष्ट्र के प्रतिनिधी रूपर्ट कोलविल (Rupert Colville) ने कहा कि "हमने बाइबिल और दूसरी धार्मिक किताबों में जहन्नम (नर्क) के बारे में पढ़ा, उसे हल्ब (Aleppo) की गलियों में देखा जा सकता है।"

बश्शारुल असद की विजयी सेना प्रभावितों के लिए सहायता सामग्री भी लाए हैं और वह है हेर–फेर किये गए कुरआन के हज़ारों नुस्ख़े। सीरिया का धार्मिक कार्य मंत्रालय यह नुस्ख़े बचे–खुचे लोगों में "दिल के सुकून" के लिए बांट रही है। नये समय की मांगो के अनुसार एडिट (Edit) किये गए इन नुस्ख़ों से जिहाद की आयतें निकाल दी गई हैं और राष्ट्रप्रेम पैदा करने के उद्देश्य से सूरह इख़्लास के विषय और वज़न के अनुसार सूरतुल असद (बश्शारुल असर की सूरह) इस बदले हुए कुरआन का हिस्सा है। (नऊज़बिल्लाह)

हल्ब (Aleppo) में जो कुछ आज हो रहा है कुछ ऐसी ही मानवतारहित कार्यवाही 36 साल पहले सीरिया के एक और बड़े शहर हमाह में की गई थी। उस समय बश्शारुल असद के पिता हाफ़िज़ अलअसद की सरकार थी, जिसने सत्ता पर क़ाबिज़ होते ही अपने भाई रिफ़अतुल असद को खुफ़िया पुलिस का चीफ़ नियुक्त किया। दोनों भाईयों का ख़्याल था कि सीरिया की उन्नति के लिए धार्मिक तत्वों की पूर्ण रूप से समाप्ति आवश्यक है। दूसरे अरब देशों की भांति सीरिया में भी इख़्वानुल मुस्लिमीन हल्ब (मुस्लिम ब्रदरेनहुड) नवजवानों को बहुत प्रिय थी। राजधानी दमिश्क़ के उत्तर में स्थित हमाह, हल्ब और हम्स नामक शहर इख़्वान के गढ़ समझे जाते थे। इख़्वानुल मुस्लिमीन का केन्द्रीय कार्यालय हमाह में था। अलआस नामक नदी के किनारे आठ लाख की आबादी वाला यह हरा–भरा शहर सीरिया के अतिरिक्त जार्डन और लेबनान को भी ग़ल्ला सप्लाई करता है। खेती के साथ हमाह कपड़े के कारोबार के लिए भी प्रसिद्ध है। मिस्र की कच्ची कपास को माहिर कारीगर क़ीमती कपड़ो और देखने योग्य पोशाकों में बदल देते हैं। इस शहर में शिक्षा का अनुपात सौ प्रतिशत के क़रीब है और शिक्षा के क्षेत्र में औरतें मर्दों के समान हैं। पूरे सीरिया की चालिस प्रतिशत से अधिक लेडी डॉक्टर हमाह और हल्ब (एलेप्पो) से हैं।

हमाह शहर में इख़्वान ने जगह–जगह लाइब्रेरियां और मदरसों के साथ चैरिटेबल अस्पताल, कम दरों के भोजनालय और अनाज डिपो बना रखे थे, जहां खाने–पीने की सामग्री कम दरों पर उपलब्ध करायी जाती थीं। हमाह के नागरिकों के अलावा क़रीब के शहरों के लोग भी इन सुविधाओं से फ़ायदा उठाते थे। रिफ़अतुल असद को सीरिया के इन तीन बड़े शहरों में इख़्वान के बढ़ते प्रभाव की अत्यधिक चिन्ता थी और वह हाफ़िज़ अलअसद के मशवरे से टारगेट किलिंग और गिरफ़्तारियों के द्वारा सीमित

कार्यवाहियां करता रहता था, लेकिन प्रभावपूर्ण रिफ़ाही कार्यवाहियों के कारण इख़्वान की लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी और धीरे–धीरे दमिश्क में भी उसका असर महसूस होने लगा। इसी दौरान जून/1980 ई0 में हाफ़िज़ अलअसद पर एक क़ातिलाना हमला हुआ जिसमें वह बाल–बाल बच गया। रिफ़अतुल असद ने इसका आरोप इख़्वान पर लगाया और औरतों सहित पांच हज़ार से अधिक इख़्वानी कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर लिये गए। उन लोगों को नग्न करके खुले ट्रकों में सवार किया गया और दिन की रोशनी में उन्हें बड़े शहरों में घुमाने के बाद प्लेमिरा (Plamyra) नामक जेल में बन्द कर दिया गया। सारे मर्दों पर अत्यधिक हिंसक कार्यवाही के बाद फ़ांसी दे दी गई जबकि औरतों को अपमानित करने के बाद उनकी आंखे फोड़कर उन्हें घर वापस भेज दिया गया।

रिफ़अतुल असद ने एक अमरीकी पत्रकार से बात करते हुए गर्व से कहा था कि वह प्लेमिरा का जल्लाद है और उसने अपने हाथों से एक हज़ार इख़्वानियों के गले में फांसी के फन्दे डाले हैं। इन गिरफ़्तारियों पर इख़्वानियों ने विरोध किया और सीरिया के सभी शहरों में बड़े–बड़े प्रदर्शन किये गए, जबकि यूरोप व अमरीका के मुसमलमानों ने भी इस पर विरोध प्रदर्शन किया, यह प्रदर्शन हिंसक होते गए। 2 फ़रवरी 1982ई0 को रिफ़अतुल असद के नेतृत्व में तीस हज़ार सीरियन व रूसी सैनिकों ने हमाह की घेराबन्दी कर ली। शहर की बिजली काट दी गई। शहर की पानी की सप्लाई रोक दी गई। रूसी विमानों की बमबारी से सारा शहर राख का ढेर बना दिया गया। इस दौरान नागरिकों के ख़िलाफ़ ज़हरीली गैस का भी प्रयोग किया गया। तीन हफ़्तों की लगातार बमबारी के बाद टैंकों और भारी तोपों की सहायता से सीरियन सेना शहर में प्रवेश कर गई और हमाह की एक–एक इमारत को लोगों समेत ढा दिया गया। तीन महीनों से अधिक समय तक जारी रहने वाले इस आपरेशन में सरकारी आंकड़ो के अनुसार पचास हज़ार लोग मारे गए, जबकि एमनेस्टी इन्टरनेशनल का कहना है कि मरने वालों की संख्या एक लाख से अधिक थी।

इस आपरेशन से सारा सीरिया भयभीत हो गया और उसके बाद हाफ़िज़ अलअसद को जनता द्वारा किसी भी प्रकार के विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। हमाह की वहशियाना कार्यवाही भी रूस की मदद से की गई थी, लेनिक उस समय ईरान में खुमैनी जीवित थे उन्होंने इस कार्यवाही की निंदा करते हुए हाफ़िज़ अलअसद को बहुत बड़ा शैतान कहा था, जिसके कारण इस मामले में ईरानी सरकार और हिज़बुल्लाह की हमदर्दियां सीरिया के मुसलमानों के साथ थीं किन्तु अब ईरान भी रूस की क़तार में खड़े होकर पीड़ितों का ख़ून बहाने में व्यस्त हैं।

शेषः हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दावत ...

2– तुरन्त किसी की भी बात का विरोध न करें। उसके दिमाग़ में जो चीज़ें हैं, जो हालात, जो भावनाएं, अनुभव हैं वह व्यक्ति अथवा समुदाय उसी के अनुसार बात कर रहा है। जब हमें उसके दिल व दिमाग़ के अन्दर की बात मालूम ही नहीं तो उसकी बात को एकदम से ग़लत नहीं कहना चाहिए। चाहे वह इतनी ग़लत हो जितनी कि चांद, सूरज, सितारे को रब मानने वाले पैग़म्बर (संदेष्टा) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने कर रहे थे।

3– दूसरे व्यक्ति, समुदाय, ख़ानदान, देश, संगठन या जो भी हो, उसके साथ रहकर उसकी सही बातों का समर्थन करना चाहिए। इस तरह उसके दिल में आपके लिए जगह बनती है। लेकिन इसके लिए साथ समय बिताना आवश्यक है और उसे अपने सामने अनुभव करवाएं, ताकि जो दलील आपके पास है, उसे वह आंखो से देख ले, जैसा कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सूरज, चांद, सितारे वालों के साथ रहकर उन्हें अनुभव करवाया था।

4– किसी के हृदय परिवर्तन का तुरन्त प्रयास न करें, केवल वास्तविकता से परिचित कराएं, साथ रहने से वह आपकी बात सुन और समझ सकता है।

5– वास्तविकता सामने आने के बाद सही बात बताएं।

6– ऐसे व्यक्ति, समुदाय, ख़ानदान, संगठन, देश के लोगों पर टिप्पणी न करें, जैसे कि देखा तुम ग़लत थे, मैं ठीक था। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उनकी अतीत की किसी बात को ग़लत नहीं कहा बल्कि उन्होंने केवल जांच–पड़ताल पर आधारित अनुभव के आधार पर बात की।

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के दलील देने के इस तरीक़े से, जिसे समझाया जा रहा है उसके मस्तिष्क व हृदय पर प्रभाव पड़ता है, और वे सुनने, समझने और विचार करने की ओर आकर्षित होते हैं, क्योंकि वे तुरन्त बात काटने का तरीक़ा नहीं अपनाते हैं इसीलिए दूसरा पक्ष दूर होने के बजाए उनसे जुड़ा रहता है और यही एक सफल दाई (धर्म प्रचारक) की विशेषता है।

फ़रिश्तों पर ईमान

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीसः "हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 एक बार लोगों के सामने बैठे हुए थे, तो आपके पास हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) उपस्थित हुए और कहाः ईमान क्या है? रसूलुल्लाह स0अ0 ने कहाः ईमान यह है कि तुम ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, आख़िरत पर, उसके रसूलों पर और क़यामत के दिन पर।" (सही बुख़ारीः 50)

फ़ायदाः अल्लाह पर ईमान लाने के साथ–साथ फ़रिश्तों पर ईमान लाना भी ईमान का एक अनिवार्य हिस्सा है। फ़रिश्ते अल्लाह तआला की एक नूरानी (प्रकाशयुक्त) मख़लूक (प्राणी) हैं। उनको पैदा करने का उद्देश्य केवल अल्लाह की इबादत है। उनका स्वभाव मनुष्य के स्वभाव से बिल्कुल भिन्न है। न उनको खाने की आवश्यकता है और न ही दूसरी आवश्यकताओं से उनका कोई लेना–देना है। उनका काम केवल अल्लाह के आदेशों की पूर्ति है। उनकी सही संख्या का ज्ञान केवल अल्लाह को है। क़ुरआन व हदीस से पता चलता है कि वे विभिन्न प्रकार के हैं।

फ़रिश्तों का एक प्रकार वह है जिसका काम केवल इन्सानों की सुरक्षा करना है। कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जिनका काम मनुष्य के कर्म का हिसाब–किताब रखना है। कुछ वे हैं जिनका काम क़ब्र में सवाल करना है। इसी प्रकार एक बड़ी संख्या ऐसी है जो जन्नत व दोज़ख़ में कार्यरत है। इसके अतिरिक्त बहुत से वे आलीशान फ़रिश्ते भी हैं जो अल्लाह के आसमान को थामे हुए हैं। क़ुरआन मजीद में उनको "हमलतुल अर्श" के नाम से याद किया गया है। इन फ़रिश्तों में चार फ़रिश्ते बहुत ही महान हैं:

(1) हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) (2) हज़रत मीकाईल (अलैहिस्सलाम) (3) हज़रत इज़्राईल (अलैहिस्सलाम) (4) हज़रत इस्राफ़ील (अलैहिस्सलाम)

इनमें उपरोक्त दो का नाम ख़ुद क़ुरआन मजीद में है, जिनमें से पहले वाले के ज़िम्मे रसूलों (संदेष्टाओं) तक वह्य (ईशवाणी) व संदेश का लाना है और दूसरे के ज़िम्मे रिज़्क़ (रोज़ी) का बंटवारा और अल्लाह के आदेशानुसार बारिश का बरसाना है। इसी तरह नीचे वर्णित दोनों फ़रिश्तों के नाम हदीसों से मालूम होते हैं, जिनमें से हज़रत इज़्राईल का काम रूह निकालना करना है और हज़रत इस्राफ़ील अपने मुंह में सूर लिए हुए क़यामत के इन्तिज़ार में हैं।

फ़रिश्तों के बारे में ध्यान रहे कि यह अल्लाह तआला की एक मासूम नूरानी मख़लूक़ है जो अल्लाह के आदेशों को तनिक भर भी अनदेखा नहीं कर सकते हैं। उनकी यह विशेषता अख़्तियारी नहीं है बल्कि उन्हें दी गई है। उनके अधिकार में न किसी बन्दे की मग़्फ़िरत है न बख़्शिश (मुक्ति) है और न ही अल्लाह की इजाज़त के बिना किसी काम को कर सकते हैं।

अल्लाह तआला का इरशाद हैः

"और फ़रिश्ते अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ तस्बीह करते रहते हैं और ज़मीन वालों के लिए इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं, सुन लो अल्लाह ही बहुत बख़्शने वाला, बहुत ज़्यादा रहम करने वाला है।" (सूरह शूराः 5)

पता चला कि फ़रिश्तों का काम अल्लाह तआला की प्रशंसा करना उसकी बड़ाई बयान करना और ज़मीन पर बसने वालों के लिए मग़्फ़िरत (मोक्ष) की दुआ करना है, न कि किसी बन्दे की मग़्फ़िरत करना। अतः यह बात स्पष्ट हो गई कि फ़रिश्तों पर ईमान लाने का अर्थ उनको ख़ुदाई में शामिल करना नहीं बल्कि उनको अल्लाह तआला की ऐसी नूरानी मख़लूक मानना है जिनका काम अल्लाह द्वारा दिये गये आदेशों को लागू करना है, उसका उल्लघंन करना उनके बस की बात नहीं।

फ़रिश्तों की तुलना में इन्सान को अल्लाह तआला ने "अधिकार" की विशेषता देकर श्रेष्ठता प्रदान की है। इसीलिए यदि कोई मनुष्य गुनाहों से बचकर तक़वे (निग्रह–संयम) वाली ज़िन्दगी गुज़ारता है तो यह उसके लिए बड़ी श्रेष्ठता की बात है, क्योंकि इन्सान ने फ़रिश्तों की तुलना में अपने अधिकार में सही चीज़ को वरीयता दी, क्योंकि फ़रिश्तों के पास अधिकार वाली विशेषता ही नहीं है। यद्यपि इसका यह मतलब हरगिज़ सभी इन्सान फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं, बल्कि जिन लोगों का जीवन संयम का श्रेष्ठतर उदाहरण है, यदि उनसे कोई ग़लती हो भी जाती है तो तुरन्त तौबा कर लेते हैं, वे लोग फ़रिश्तों से श्रेष्ठ होंगे, न कि वे जिसने अल्लाह से अपना रिश्ता तोड़ लिया हो अपने जीवन के उद्देश्य को भूला हुआ हो।

मुस्लिम वोटों की राजनीति

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

भारत के इतिहास में मुसलमानों का किरदार हमेशा ही महत्वपूर्ण भूमिका में रहा है। इस देश को संवारने और इसको सफलता की चोटी तक पहुंचाने में उन्होंने बहुत बड़ी–बड़ी कुर्बानियां दी हैं। लेकिन आज़ादी के बाद मुसलमानों की हैसियत केवल सियासी मोहरों की सी हो गई है, जिनका इस्तेमाल हर छोटी–बड़ी पार्टियां अपने फ़ायदे के लिए करती हैं। आज़ादी के बाद से मुसलमान राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक हर प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जिसकी गंभीरता का अनुमान "सच्चर कमेटी रिपोर्ट" से भली भांति लगाया जा सकता है। मुसलमानों से सुहानुभूति प्रकट करने के लिए इस कमेटी का निर्माण किया गया था या यह कहिये कि राजनीति की बिसात पर एक चाल चली गई थी। यही कारण है कि इस रिपोर्ट के आने तक "मुस्लिम से हमदर्दी" की भावना ठण्डी पड़ गई।

आज़ादी के बाद से देश की सत्ता एक वर्ग विशेष के हाथ में रही और वह वर्ग क़ौम व मुल्क से अधिक अपने परिवार व अपनी बिरादरी की खुशहाली की चिन्ता में लगा रहा। अपने लाभ की ख़ातिर उसने दंगे करवाए। धर्म आधारित नफ़रत को बढ़ावा दिया और साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया और समाज को अलग–अलग वर्गों में बांट दिया। लेकिन इधर कुछ सालों से देश का राजनीतिक परिदृष्य बड़ी हद तक बदल चुका है। अतः देश का वह वर्ग जो कल तक सत्ता की थाली से छोटे–छोटे टुकड़ो का भी अधिकारी न था और जिसको समाज में अछूत, आदीवासी, दलित और पिछड़ा कहकर अलग–थलग कर दिया गया था वह आज सत्ता का मज़बूत दावेदार है और पिछले कई चुनावों में उसने कामयाबी के झण्डे भी गाड़े हैं।

लेकिन इस पूरे सियासी मन्ज़रनामे में मुसलमानों की हैसियत अभी भी राजनीतिक मोहरों की ही है। पच्चीस करोड़ की संख्या के साथ एक बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय होने के बावजूद भी उनका कोई राजनीतिक आधार नहीं है, बल्कि वे इस बहस का विषय हैं कि उनको इस देश में रहने का अधिकार भी है या नहीं?वे देश के वफ़ादार हैं या ग़द्दार हैं?और फिर मुसलमानों की सारी योग्यताएं इन सवालों के जवाबों को ढूंढने में और स्वयं को राष्ट्रवादी साबित करने में नष्ट हो जाती हैं।

आज मुसलमान इस स्थिति में नहीं कि सरकार से अपनी कोई बात मनवा सकें, चाहे संविधान में उनको इस बात का अधिकार ही क्यों न देता हो। बल्कि अब तो वे इतने पिछड़ चुके हैं कि छोटी–छोटी पार्टियों के सामने हाथ फैलाने को मजबूर हैं। जब भी किसी नई सरकार का गठन होता है तो वे विभिन्न प्रकार की खुशफ़हमियों में पड़ जाते हैं और एक मायूस, मजबूर, लाचार प्रजा की भांति सरकार से दया व कृपा की आशा कर बैठते हैं और फिर अपनी सामुदायिक ख़ामियों व राजनीतिक कमियों को "आरक्षण" के बल पर दूर करना चाहते हैं।

भारतीय मुसलमान पिछले लगभग सत्तर सालों से विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के बैनर तले अपना भविष्य ढूंढते रहे हैं। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हर पार्टी को उन्होंने अपना मसीहा समझा। वे कभी इस पार्टी तो कभी उस पार्टी की ढफली बजाते रहे और वे पार्टियां "हिन्दुत्व" का हव्वा खड़ा करके अपना राजनीतिक लक्ष्य साधती रहीं, जिसका परिणाम यह है कि आज कोई भी पार्टी उनके हित में गंभीर नहीं है।

इस लम्बे अर्से में मुसलमानों की राजनीतिक दृढ़ता और उनकी राजनीतिक समस्याओं को लेकर बहुत सी राजनीतिक हस्तियां सामने आईं और उन्होंने अलग–अलग नुस्ख़े भी दिये। कुछ ने मुसलमानों के राजनीतिक पिछड़ेपन का कारण यह बताया कि उनके पास आज कोई नेता नहीं। नेतृत्व के अभाव ने उनको सही मार्गदर्शन से वंचित कर रखा है। जबकि गली–गली, कूचे–कूचे में मुसलमानों के इतने नेता मौजूद हैं कि पहले इतने सोचा भी नहीं जा सकता था। राजनीति की समझ रखने वाले लोगों का कहना है कि जब तक मुसलमान राजनीतिक रूप से एकजुट नहीं हो जाते उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकेगा। किसी ने कहा कि आवश्यकता है कि मुसलमान एक प्लेटफ़ार्म पर आएं तब ही सुधार संभव है। कुछ का कहना है कि अपनी राजनीतिक पार्टी ही समस्याओं का समाधान कर सकती है। इस प्रकार के न जाने कितने नुस्ख़े हैं जो मुसलमानों के "शुभचिन्तकों" ने प्रस्तुत किये किन्तु अफ़सोस की सारे

नुस्ख़ों के साथ यह शर्त भी है कि जो कुछ भी हो हमारे ही नेतृत्व में हो और हमारे ही बैनर तले हो!

आज भारत की राजनीति में कई राजनीतिक पार्टियों का अस्तित्व है। उन पार्टियों का 'घोषणापत्र' यद्यपि अत्यधिक गंभीर और ठोस है लेकिन इन नेताओं की जल्दबाज़ी, अनुभवहीनता और धैर्य की कमी हर मोड़ पर अपना काम कर देती है। उनके भाषण भावुक कर देने वाले होते हैं जिनसे क्षणिक गर्मी अवश्य पैदा की जा सकती है और कुछ समय के लिए उनकी प्रशंसा भी की जा सकती है लेकिन राजनीति के मैदान में भावुकता से कहीं अधिक प्रयास व कर्म महत्वपूर्ण हैं और अगर बात ग़लत न हो तो मुस्लिम नेताओं की एक आम कमज़ोरी यह भी है कि वे ज़मीनी सतह पर काम करने के बजाए बयानबाज़ियों को ही कामयाबी की कुन्जी समझ लेते हैं। संभव है कि इससे कुछ ज़ाहिरी फ़ायदा दिखाई देता हो लेकिन इसके दूरगामी परिणाम मुसलमानों के ख़िलाफ़ ही जाते हैं। अतः मुस्लिम नेताओं की सबसे बुनियादी ज़िम्मेदारी यह है कि जनता से अपने संबंध को मज़बूती प्रदान करें और मानवीय आधारों पर उनकी समस्याओं को हल करने का प्रयास करें। इसके बाद ही चुनावों में उनकी प्रभावपूर्ण भूमिका की आशा की जा सकती है।

इस बात से कदापि इनकार नहीं किया जा सकता कि राजनीति भी दीन का एक अहम हिस्सा है और मुसलमानों को इस मैदान में भी विश्वासपात्र और मज़बूत नेतृत्व की आवश्यकता है और यह काम उलमा (ज्ञानियों) की संरक्षता व निगरानी में ही संभव है या फिर ऐसे उलमा राजनीति के मैदान में आएं जो पूर्ण रूप से एकाग्र एवं लीन होकर ज़मीनी मेहनत कर सकें और उसे दीन की एक अहम ख़िदमत के तौर पर अपने मिशन में शामिल करें। अतीत में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं इन्हीं उलमा ने मुसलमानों का नेतृत्व किया। उनके राजनीतिक धारे को एक सकारात्मक व प्रभावपूर्ण दिशा प्रदान की। उन्हें एक प्लेटफ़ार्म पर जमा करने का भरकस प्रयास किया और उनके क़ौमी व मिल्ली समस्याओं के समाधान हेतु अविस्मरणीय कार्य किया।

उत्तर प्रदेश के चुनाव निकट हैं। राजनीतिक पार्टियां सरगर्म हैं और मुसलमानों को लुभाने में लग गईं हैं। चुनावी वादों का सिलसिला जारी है। कारनामे भी गिनाए जा रहे हैं और अत्याचारों को याद कराया जा रहा है। समर्थन व विरोध का वातावरण बन रहा है। कहने का अर्थ यह है कि जितने मुंह उतनी बातें! लेकिन किसी भी धर्मनिरपेक्ष पार्टी का दामन साफ़–सुथरा न होने के कारण मुस्लिम समाज इस कशमकश में पड़ा है कि वे किस पार्टी को वोट दे?और जो मुस्लिम पार्टियां हैं उनकी साख अभी बहुत ही क्षीण है और जनता में उनकी पकड़ बहुत कमज़ोर है।

निसंदेह मुस्लिम नेतृत्व अपने निरीक्षण व अध्ययन के बाद किसी न किसी पार्टी के समर्थन की घोषणा कर रहे हैं। लेकिन हर नेता का अपना ज़ाती अनुभव और ज़ाती नज़रिया है, क्योंकि इलाक़ो के हालात भी अलग–अलग हैं और राजनीतिक समस्याएं भी भिन्न हैं। ऐसी स्थिति में किसी एक पार्टी पर सबकी सहमति असंभव है।

सियासी माहिरों का कहना है कि मुसलमानों को किसी एक धर्मनिरपेक्ष पार्टी के बजाए पार्टी के प्रत्याशियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। किसी भी पार्टी का पूर्ण रूप से समर्थन करने से अच्छा है कि अपने क्षेत्र में ऐसे उम्मीदवार का समर्थन करें जिसके दामन पर जुर्म की छींटे कम से कम हों और जिसके अन्दर मानव सेवा का भाव अधिक से अधिक हो, फिर वह प्रत्याशी चाहे किसी भी पार्टी से हो और जहां ऐसे सेक्युलर प्रत्याशी न हों वहां मुसलमानों को ऐसे प्रत्याशी को तैयार करने की कोशिश करनी चाहिए।

सच पूछिये तो राजनीति करना या सरकार बनाना मुसलमानों का उद्देश्य नहीं है बल्कि नेक कामों के बदले यह अल्लाह तआला की तरफ़ से एक ईनाम है, इस रूप से भारतीय राजनीति मुसलमानों के लिए केवल एक बाह्य आवश्यकता है और विश्लेषण भी यही बताता है कि मुसलमानों की केवल बीस प्रतिशत समस्याएं ही ऐसी हैं जिनका संबंध देश की राजनीति से है जबकि बाक़ी अस्सी प्रतिशत समस्याएं उन्हीं की पैदा की हुईं हैं और उनका हल भी केवल उन्हीं के पास है। बस आवश्यकता इस बात की कि इस्लामी शिक्षाओं को समझा जाए और उनको अपने जीवन में लागू किया जाए। क़ुरआन कहता है:

"तुममें जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये उनसे अल्लाह का वादा है कि उनसे अल्लाह तआला का वादा है कि अल्लाह तआला उनको ज़रूर ज़मीन में हाकिम बनाएगा जैसा कि उसने पहलों को हाकिम बनाया।"

दिलों की फ़तेह

अबुल अब्बास ख़ाँ

वह समरक़न्द का सबसे बड़ा पादरी था। उसका फ़रमान शाही फ़रमान से बढ़कर था। उसकी हुक्मरानी लोगों के दिलों पर थी। गर्दनें उसके सामने झुकी रहतीं, आवाज़ें धीमी रहतीं, दिल की धड़कनें तेज़ रहतीं और पूरा देश अदब से सर को झुकाए रहता! क्योंकि उस मुल्क में उसे हज़रत ईसा का नायब समझा जाता था लेकिन..... लेकिन आज उसकी दुनिया ही बदली हुई है। न आंखों में नींद, न दिल में क़रार, बस एक उलझन और एक बेचैनी! अब क्या होगा?मुस्लिम फ़ौजें शहर में दाख़िल हो चुकी हैं। क़ब्ज़ा पूरा हो चुका है। इस्लामी झण्डा लहरा रहा है। गली–कूचों से अज़ाने सुनाई दे रही हैं और.....अपने सर के बाल नोचते–नोचते वह रुक गया। उसे आशा की एक किरन नज़र आयी। काग़ज़–क़लम उठाया और मुस्लिम ख़लीफ़ा के नाम एक परवाना लिखा और नीम–अंधेरे ही दूत को रवाना कर दिया।

दूत सरपट घोड़ा दौड़ाता रहा और बहुत जल्द ही दमिश्क़ की एक आलीशान इमारत के पास जा पहुंचा। लोगों से पूछा कि क्या यह आलीशान महल मुसलमानों के हाकिम का है?जवाब मिला कि यह तो जामा मस्जिद है, ख़लीफ़ा का मकान उधर सामने की गली में है। दूत बताए हुए पते पर पहुंचा। वहां एक सादा सा कच्चा मकान था और एक मामूली सा आदमी सीढ़ी पर चढ़कर छत की पुताई कर रहा था। दूत ने सोचा कि शायद वह रास्ता भटक गया है या उसके साथ मज़ाक़ किया गया है। वापस मस्जिद के पास पहुंचा और फिर से पता मालूम किया। लोगों ने भरोसा दिलाया कि वही ख़लीफ़ा का घर है और वही आदमी मुसलमानों का ख़लीफ़ा है। दूत अचम्भे में था कि आख़िर मामला क्या है। इतनी बड़ी रियासत का हाकिम और इतने ख़राब हाल! न जिस्म पर शाही लिबास और न मकान की शान व शौकत! न जाने कैसे–कैसे सवालात थे जो उसके दिल व दिमाग़ को झिंझोड़ रहे थे। आख़िरकार उसने सारे ख़्यालातों को ज़ोर से झिड़क दिया और बेदिली के साथ फिर उसी जगह पर पहुंचा। कुन्डी खटखटाई तो घर से वही आदमी निकला। दूत ने पादरी का ख़त दिया। ख़लीफ़ा ने उस ख़त को पढ़ा और अपनी मुहर के साथ उसी पर फ़रमान जारी कर दिया:

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की तरफ़ से समरक़न्द में तैनात हाकिम के नाम! एक क़ाज़ी को तय करो जो पादरी की शिकायत सुने और फ़ैसला करे। वस्सलाम

काग़ज़ का यह टुकड़ा क्या काम करेगा। इतना बड़ा लश्कर और यह मामूली सा फ़रमान! ख़्यालों में डूबा हुआ दूत उदास तबियत और बोझिल क़दमों के साथ वापस लौटा। पादरी जो पहले से इन्तिज़ार कर रहा था, झट से आगे बढ़ा और बार–बार ख़त को पलटने लगा। हां जवाब तो उसी ने लिखा है जिसके नाम ख़त था लेकिन.....उसे दुनिया अंधेरी लगने लगी, अब क्या होगा?आशा की यही तो आख़िरी किरन थी। यह तो बस एक रस्मी सा फ़रमान है। फिर भी चलो देखें तो क्या तमाशा होता है।

पादरी ने ख़लीफ़ा का फ़रमान समरक़न्द के हाकिम को पेश किया। हाकिम ने तुरन्त हुक्म दिया कि जमीअ को क़ाज़ी तय किया जाए और वह पादरी की शिकायत सुने। तुरन्त तामील हुई और उसी मौक़े पर अदालत लग गई। एक चोबदार ने अजीमुश्शान लश्कर के सेनापति कुतैबा बिन मुस्लिम को आवाज़ दी। किसी तरह का कोई और शब्द आगे–पीछे नहीं लगाया गया। कुतैबा हाज़िर हो गए और पादरी के बग़ल में खड़े हो गए।

क़ाज़ी ने पादरी से पूछा कि तुम्हारा क्या दावा है?

पादरी ने कहा: क़तैबा ने हमारे शहर पर जो फ़ौजकुशी की है वह इस्लामी उसूलों के ख़िलाफ़ है क्योंकि उन्होंने हमें पहले से कोई सूचन नहीं दी। न हमें इस्लाम क़ुबूल करने की दावत दी और न राय–मशवरे का समय दिया।

क़ाज़ी ने कुतैबा से कहा: पादरी के इस दावे के बारे में तुम क्या कहते हो?

कुतैबा ने कहा कि आस–पास के इलाक़े फ़तेह हो चुके थे और हमें यक़ीन था कि यह लोग भी जंग ही करेंगे। क्योंकि यह बहुत ही अहम इलाक़ा था इसलिए हमने मौक़े का फ़ायदा उठाया और.....

क़ाज़ी ने कुतैबा की बात काटते हुए कहा कि जो पूछा गया है उसका जवाब दो। क्या तुमने इस्लाम के जंगी उसूलों का लिहाज़ रखा था?क्या पादरी की बात सच है?

कुतैबा ने सर झुका लिया और कहा हां मुझसे ग़लती हुई है, पादरी ने जो कुछ कहा वह सही है।

क़ाज़ी ने कहा कि क्योंकि तुम मान लेते हो इसलिए

किसी गवाह या दलील की ज़रूरत नहीं है। इस्लाम की ख़ूबी फ़तेह करना नहीं है बल्कि इन्साफ़ करना है। लिहाज़ा यह अदालत फ़ैसला सुनाती है कि सभी मुसलमान फ़ौजी और सभी ओहदेदार अपनी बीवी–बच्चे और साज़ोसामान के साथ जल्द से जल्द समरक़न्द का इलाक़ा ख़ाली कर दें। एक भी मुसलमान बाक़ी न रहे और अगली बार जब इस इलाक़े का रुख़ करना हो तो पहले इस्लामी उसूलों की पाबन्दी की जाए।

क़ाज़ी ने फ़ैसला सुनाया, अदालत को बर्ख़ास्त किया और अपनी जगह से उतर कर आम लोगों की भीड़ में शामिल हो गया।

पादरी जो कुछ देख व सुन रहा था वह सब यक़ीन के क़ाबिल नहीं था। उसे यह सब एक ड्रामा सा लग रहा था। क्या काग़ज़ के इस मामूली से टुकड़े में इतनी ताक़त है?क्या कहीं ऐसा भी होता है कि कोई जीता हुआ मुल्क छोड़ दे?वह भी ऐसा हरा–भरा मुल्क! क्या अदालत ऐसी भी हुआ करती हैं! आख़िर यह किस दुनिया के लोग हैं!!

और फिर कुछ ही घन्टों बाद इतिहास ने वह मन्ज़र भी देखा कि उसी समरक़न्द की गलियों से एक विजयी सेना शर्मिन्दगी का बोझ लिये हुए निकल रही है। जी हां शर्मिन्दगी! शर्मिन्दगी इस बात की कि उनसे कोताही हो गई। शर्मिन्दगी इस बात की इस्लामी हुक्मों की पैरवी न हो सकी। शर्मिन्दगी इस बात की ख़लीफ़ा के दरबार तक शिकायत पहुंची और उनका अब तक का ठहराव इस्लामी उसूलों के ख़िलाफ़ था।

मुसलमानों का क़ाफ़िला शहर की सरहदों को पार कर रहा था और पीछे धूल का बवन्डर उठ रहा था। मुहल्ले वीरान और गलियां सूनी हो रहीं थी। लोग हैरान व परेशान सवाल पर सवाल कर रहे थे और जानने वाले बस इतना ही कह रहे थे कि इस्लामी अदालत ने फ़ैसला किया है और यह उसकी तामील है।

कुछ घन्टे भी न गुज़र पाये थे कि रोने–धोने की आवाज़े उठने लगीं। कोई बाहों में टूटा जा रहा था। किसी की चीख़ निकल रही थी। कोई दीवानों की तरह दौड़ा जा रहा था तो कोई क़दमों में बिछा जा रहा था। ज़बानों पर इल्तिजाएं, फ़रियादें और दुहाइयां.....क्या इस शहर पर खुदा का क़हर टूटा है?क्या यह फ़रिश्ता सिफ़त लोग रूठ गए हैं। अगर यह चले गए तो हमें तहज़ीब कौन सिखाएगा। रहन–सहन कौन बताएगा?मुहब्बत का पैग़ाम कौन देगा?

इतिहास गवाह है कि समरक़न्द के लिए यह जुदाई बर्दाश्त से बाहर थी। समरक़न्द के लोग अपना भला चाहने वालों से कुछ घन्टे भी न बिछड़ सके और पूरा शहर "लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" का नारा लगाता हुआ इस्लामी लश्कर के पास पहुंच गया और पूरे अदब के साथ उन्हें वापस अपने साथ ले आया।

जो दिलों को फ़तेह कर ले।
वही फ़ातेह–ए–ज़माना।।

इस्लामी सभ्यता की विशेषता

हमारी सभ्यता "एकेश्वरवाद" के आधार पर स्थापित है। यह सर्वप्रथम सभ्यता है जो "एकेश्वरवाद" की ओर बुलाती है जिसकी सत्ता व हुकूमत में किसी को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इस आस्था का इस्लामी सभ्यता पर इतना गहरा असर पड़ा कि वह सभी अगली–पिछली सभ्यताओं से श्रेष्ठ हो गई और अपनी आस्था, व्यवस्था और सभ्यता व संस्कृति में हर प्रकार की मूर्तिपूजा से पवित्र हो गई है।

इस एकेश्वरवाद ने एकता का वह रंग पैदा किया जिसका असर हमारी सभ्यता के समस्त लक्षणों पर पूर्ण रूप से अंकित है। इसी कारण इसका संदेश एवं उद्देश्य एकता व समानता है। क़ानून निर्माण में इस्लामी सभ्यता की छाप है। जनहित के कार्यों में इसकी छाप है। समाज की सामूहिक बनावट में इसकी छाप है। यहां तक कि इस्लामी शिल्प में भी इसकी छाप है।

हमारी सभ्यता की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि उसने व्यवहारिक नियमों को अपनी पूरी व्यवस्था और अपनी समस्त कार्यवाहियों में प्रथम स्थान प्रदान किया है। इन नियमों को कभी भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है और कभी उन्हें व्यक्तिगत या सामूहिक लाभ का साधन भी नहीं बनाया। शासन में, शिल्प व कला में, क़ानून निर्माण में, सुलह व जंग में, आर्थिक एवं घरेलू मामलों में व्यवहारिक नियमों की अनूकूलता को सदा ध्यान में रखा गया। बल्कि इस्लामी सभ्यता के संदर्भ में जिस श्रेष्ठता को पहुंची उस हद तक कोई नई या पुरानी सभ्यता नहीं पहुंची और इस संदर्भ में इस सभ्यता ने जो अमिट छाप छोड़ी है वह अचम्भित करने वाली है। यह एकमात्र सभ्यता है मानवता के लिए विशुद्ध भलाई की ज़मानत दी है और दुष्कर्म के साये से भी बचाया है।

डॉक्टर मुस्तफ़ा सबाई (रह०)

तौबा व इस्तिग़फ़ार

मरने वालों के लिए इस्तिग़फ़ार

मरने के बाद इन्सान बिल्कुल बेइख़्तियार हो जाता है। उसके अमल करने और ज़बान को काम में लाने का ज़माना गुज़र जाता है। वह ज़िन्दा लोगों के आमाल और अपने लिए इस्तिग़फ़ार का बहुत मोहताज होता है। हदीस में मरने वाले की मिसाल उस व्यक्ति से दी गयी है जो नदी में डूब रहा हो और मदद के लिए चीख़ व पुकार रहा हो। वह बेचारा इन्तिज़ार करता है कि माता–पिता या भाई या किसी दोस्त की तरफ़ से दुआ–ए–रहमत व मग़्फ़िरत का तोहफ़ा पहुंचे। जब किसी की तरफ़ से उसको दुआओं का तोहफ़ा पहुंचता है तो वह उसको पूरी दुनिया से महबूब और प्यारा होता है और दुनिया में रहने–बसने वालों की दुआओं की वजह से क़ब्र के मुर्दों के लिए ज़िन्दों का ख़ास तोहफ़ा उनके लिए इस्तिग़फ़ार व मग़्फ़िरत की दुआ करना है।

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़रमाया:

''अल्लाह तआला की तरफ़ से जन्नत में किसी नेक आदमी का दर्जा एकदम बुलन्द कर दिया जाता है तो वह जन्नती बन्दा पूछता है कि ऐ परवरदिगार मेरे दर्जे में और मर्तबे में कितनी और कहां से तरक़्क़ी हुई?जवाब मिलता है तेरे लिए तेरी फ़लां औलाद के मग़्फ़िरत की दुआ करने की वजह से।''

वालिदैन (माता–पिता) का हक़ दुआ–ए–मग़्फ़िरत

माता–पिता के एहसानों का बदला ज़िन्दगी में तो यह है कि उनकी सेवा करे, उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम न करे, उनके इशारों को पहचाने और ज़बान से नाफ़रमानी की एक भी बात न निकले और इन्तिक़ाल (मृत्यु) के बाद उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करे, उनके लिए क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करे, और सवाब पहुंचाए, दुआएं करे, इस्तिग़फ़ार करे, इसलिए कि माँ–बाप ज़िन्दगी में औलाद की मुहब्बत व ख़िदमत के जितने मोहताज थे, उससे ज़्यादा मरने के बाद होते हैं और लड़के–लड़की का फ़र्ज़ है कि वे अपने मां–बाप के लिए लगातार मग़्फ़िरत की दुआ करते रहें।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 02 | FEBRUARY 2017 | VOLUME: 09

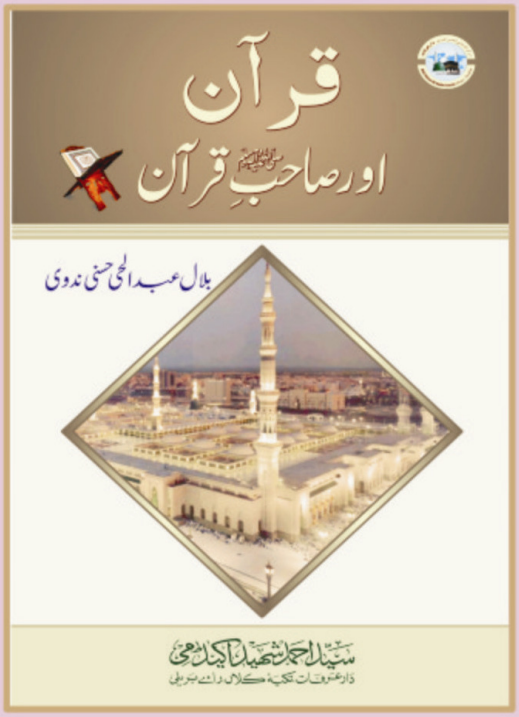

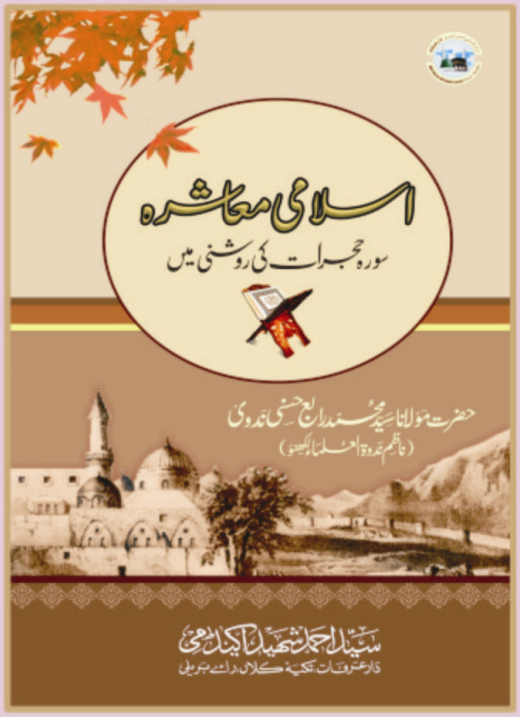

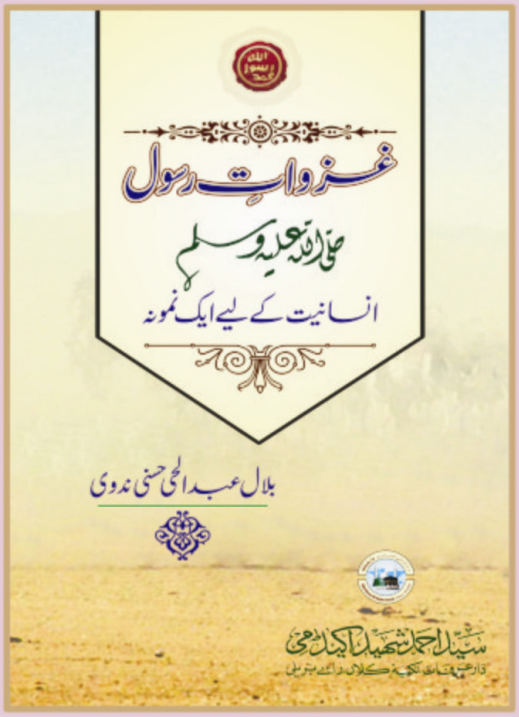

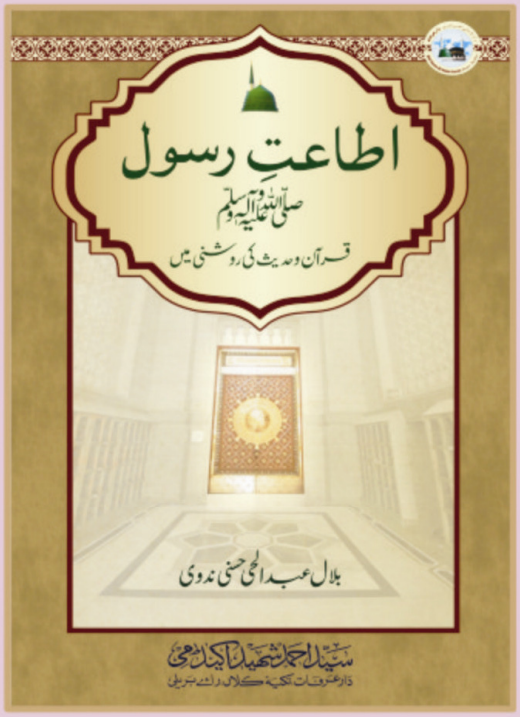

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.